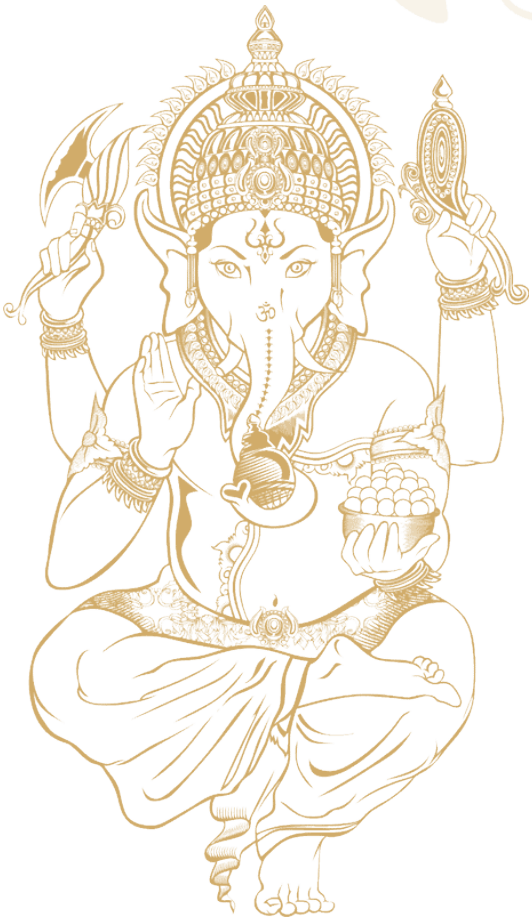

Amrita

07 Dec 1985

08:40 AM

St Petersburg

Model: Web-KundliDarpan

Order No: 120409801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**6-07/12/1985**
दिन	शुक्र-शनिवार
जन्म समय	**08:40:00 घंटे**
इष्ट	57:25:39 घटी
स्थान	**St Petersburg**
राज्य	Saint Petersburg
देश	Russia

अक्षांश	59:55:00 उत्तर
रेखांश	30:21:00 पूर्व
मध्य रेखांश	45:00:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:58:36 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	07:41:24 घंटे
वेलान्तर	00:08:57 घंटे
साम्पातिक काल	12:45:11 घंटे
सूर्योदय	09:41:44 घंटे
सूर्यास्त	15:57:05 घंटे
दिनमान	06:15:21 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्य के अंश	21:24:05 वृश्चिक
लग्न के अंश	08:59:51 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी	**कन्या - बुध**
नक्षत्र-चरण	**हस्त - 2**
नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
योग	आयुष्मान
करण	वणिज
गण	देव
योनि	महिष
नाड़ी	आद्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	मेष
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	ष-षडबली
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1907	मार्गशीर्ष	16
पंजाबी	संवत : 2042	मार्गशीर्ष	22
बंगाली	सन् : 1392	मार्गशीर्ष	21
तमिल	संवत : 2042	कार्तिगई	22
केरल	कोल्लम : 1161	वृश्चिकम	22
नेपाली	संवत : 2042	मार्गशीर्ष	22
चैत्रादि	संवत : 2042	मार्गशीर्ष	कृष्ण 10
कार्तिकादि	संवत : 2042	कार्तिक	कृष्ण 10

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 9
तिथि समाप्ति काल _____: 22:02:56
जन्म तिथि _____: 10
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: उ०फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 23:50:48 घंटे
जन्म योग _____: हस्त
सूर्योदय कालीन योग ____: प्रीति
योग समाप्ति काल _____: 16:51:01 घंटे
जन्म योग _____: आयुष्मान
सूर्योदय कालीन करण ____: तैतिल
करण समाप्ति काल _____: 10:51:38 घंटे
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 22:02:59
भभोग _____: 56:25:44
भोग्य दशा काल _____: चंद्र 6 वर्ष 1 मा 14 दि

घात चक्र

मास _____: भाद्रपद
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: श्रवण
योग _____: शुक्ल
करण _____: कौलव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: श्वान
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: मेष
चन्द्र _____: मिथुन
मंगल _____: वृष
बुध _____: मीन
गुरु _____: मिथुन
शुक्र _____: कर्क
शनि _____: मीन
राहु _____: सिंह

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

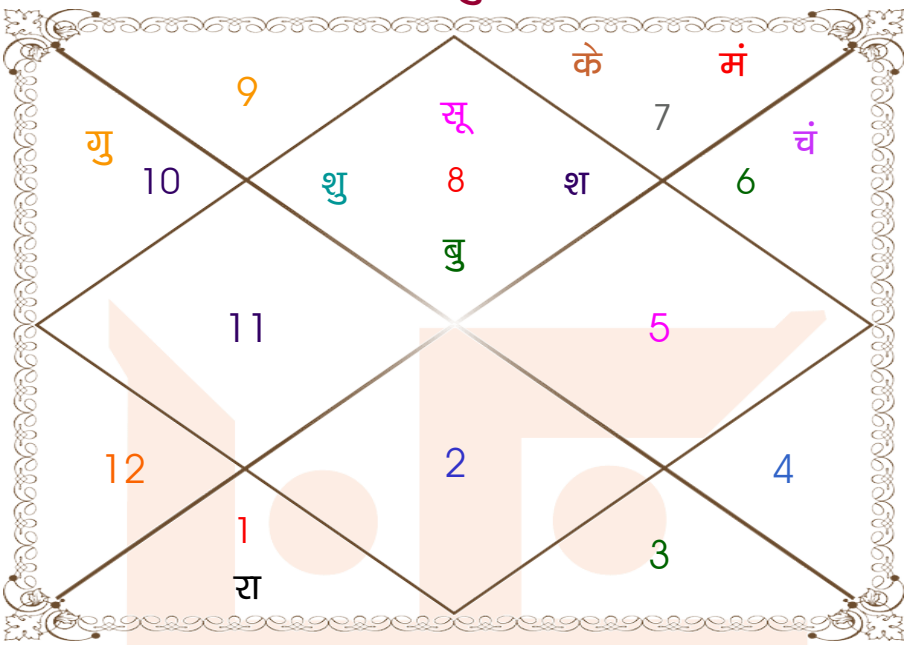

चन्द्र कुंडली

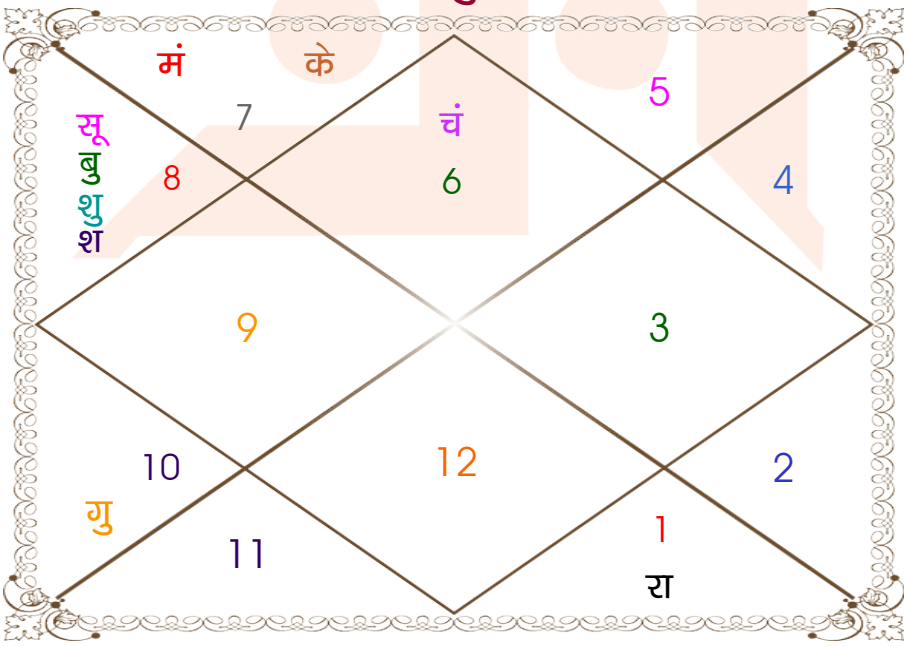

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

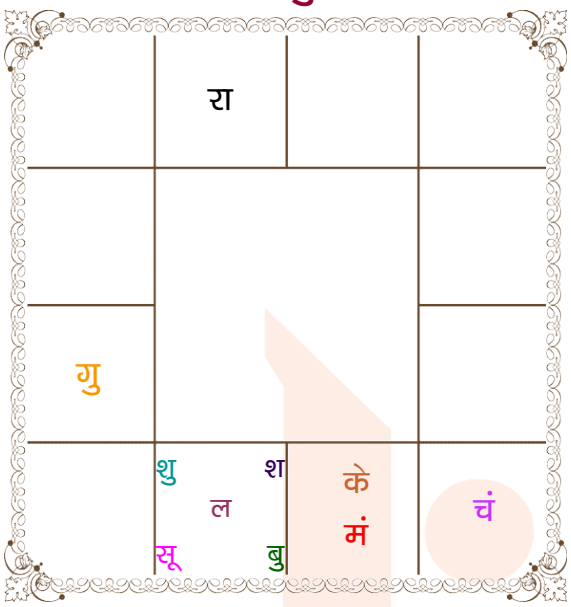

लग्न कुंडली

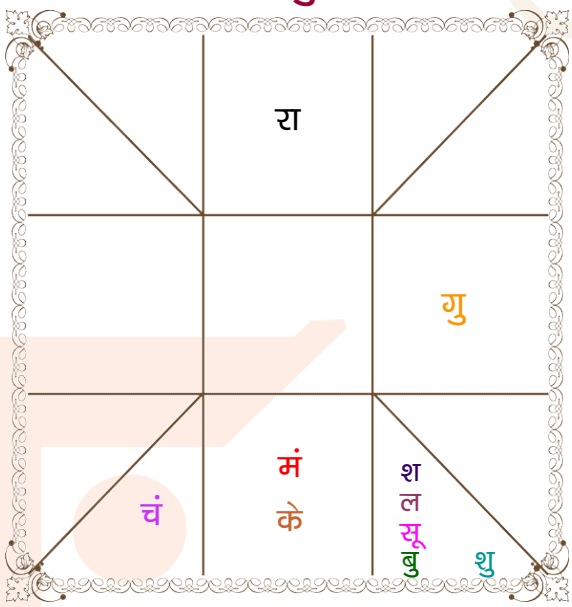

विंशोत्तरी
चन्द्र 6वर्ष 1मा 14दि

चन्द्र

07/12/1985

21/01/2102

चन्द्र	21/01/1992
मंगल	21/01/1999
राहु	20/01/2017
गुरु	20/01/2033
शनि	21/01/2052
बुध	20/01/2069
केतु	21/01/2076
शुक्र	21/01/2096
सूर्य	21/01/2102

योगिनी
संकटा 4वर्ष 10मा 23दि

संकटा

31/10/2018

31/10/2026

संकटा	10/08/2020
मंगला	30/10/2020
पिंगला	11/04/2021
धान्या	10/12/2021
भ्रामरी	31/10/2022
भद्रिका	11/12/2023
उल्का	11/04/2025
सिद्धा	31/10/2026

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	08:59:51	232:02:54	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	---
सूर्य			वृश्चि	21:24:05	01:00:56	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	मित्र राशि
चंद्र			कन्या	15:10:15	14:08:22	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	मित्र राशि
मंगल			तुला	01:40:07	00:37:11	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	सम राशि
बुध	व		वृश्चि	05:14:40	00:13:20	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	सम राशि
गुरु			मक	19:44:16	00:10:35	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	केतु	नीच राशि
शुक्र			वृश्चि	10:59:16	01:15:28	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	सूर्य	सम राशि
शनि			वृश्चि	08:43:55	00:07:02	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	शत्रु राशि
राहु			मेष	15:00:42	00:01:19	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
केतु			तुला	15:00:42	00:01:19	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	केतु	सम राशि
हर्ष			वृश्चि	24:21:05	00:03:40	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	---
नेप			धनु	09:00:01	00:02:11	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	---
प्लूटो			तुला	12:33:07	00:02:00	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	---
दशम भाव			कन्या	18:37:19	--	हस्त	--	13	बुध	चंद्र	बुध	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:39:27

लग्न-चलित

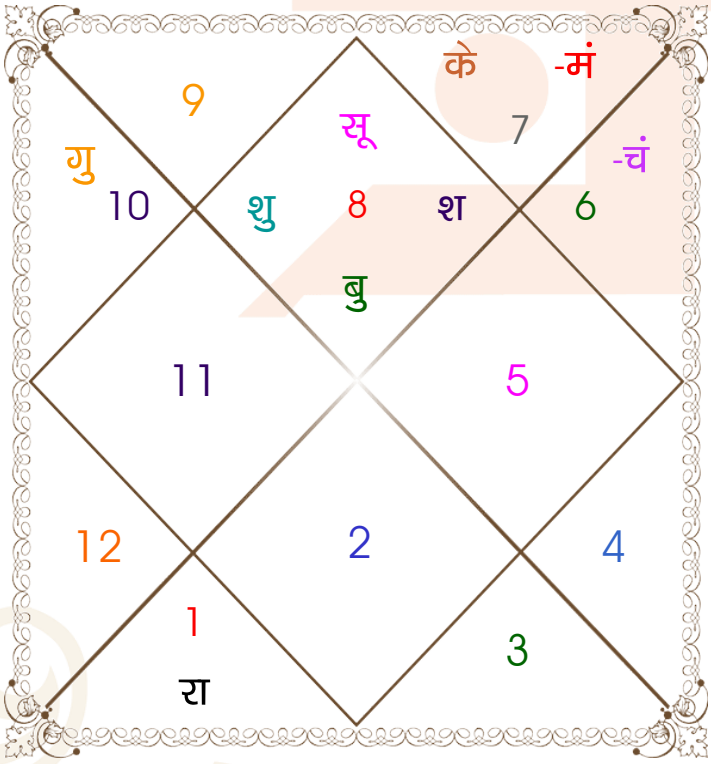

चन्द्र कुंडली

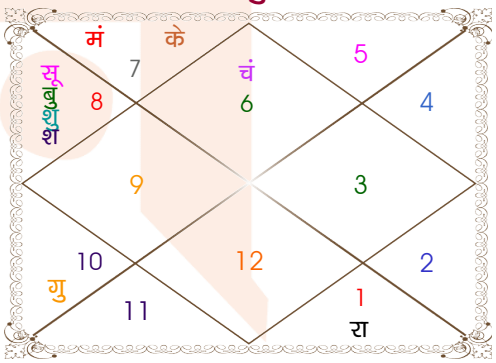

नवमांश कुंडली

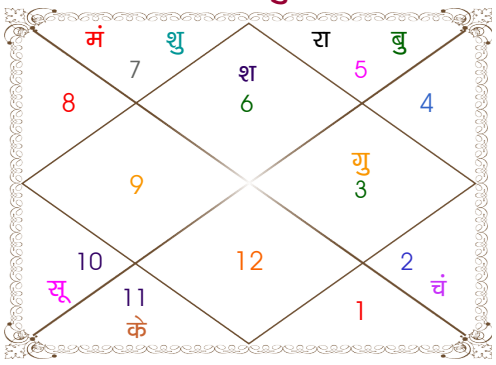

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृश्चिक	00:36:05	वृश्चिक	08:59:51
2	धनु	00:36:05	धनु	22:12:20
3	मकर	13:48:35	कुम्भ	05:24:50
4	कुम्भ	27:01:04	मीन	18:37:19
5	मीन	27:01:04	मेष	05:24:50
6	मेष	13:48:35	मेष	22:12:20
7	वृष	00:36:05	वृष	08:59:51
8	मिथुन	00:36:05	मिथुन	22:12:20
9	कर्क	13:48:35	सिंह	05:24:50
10	सिंह	27:01:04	कन्या	18:37:19
11	कन्या	27:01:04	तुला	05:24:50
12	तुला	13:48:35	तुला	22:12:20

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	08:59:51
2	धनु	15:08:31
3	कुम्भ	09:36:01
4	मीन	18:37:19
5	मेष	11:51:50
6	मेष	27:19:06
7	वृष	08:59:51
8	मिथुन	15:08:31
9	सिंह	09:36:01
10	कन्या	18:37:19
11	तुला	11:51:50
12	तुला	27:19:06

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी

चलित कुंडली

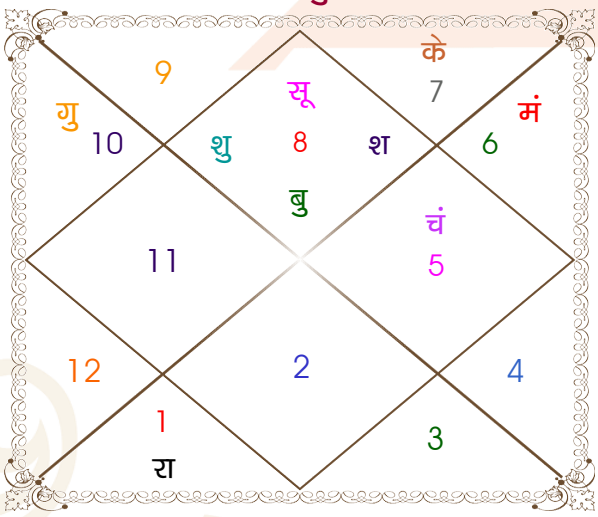

भाव कुंडली

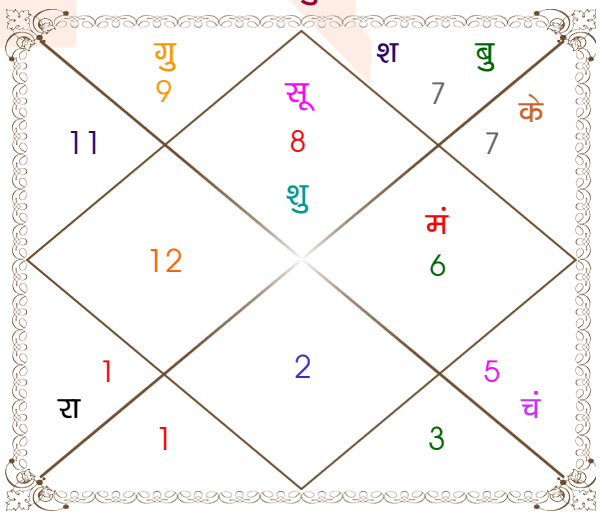

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	कुमार	मुदित	निद्रा	3.07	38 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	युवा	मुदित	प्रकाश	3.19	25 %
मंगल	कलत्र	भ्रातृ	बाल	शान्त	निद्रा	2.12	51 %
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	मृत	निपीदित	नृत्यलिप्सा	4.33	67 %
गुरु	अमात्य	धन	कुमार	भीत	आगमन	0.69	50 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	वृद्ध	निपीदित	आगमन	2.35	61 %
शनि	पुत्र	आयु	वृद्ध	खल	नेत्रपाणि	4.48	16 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	खल	उपवेशन	0.00	85 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	शान्त	भोजन	0.00	85 %
कुल						20.22	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी

चलित कुंडली

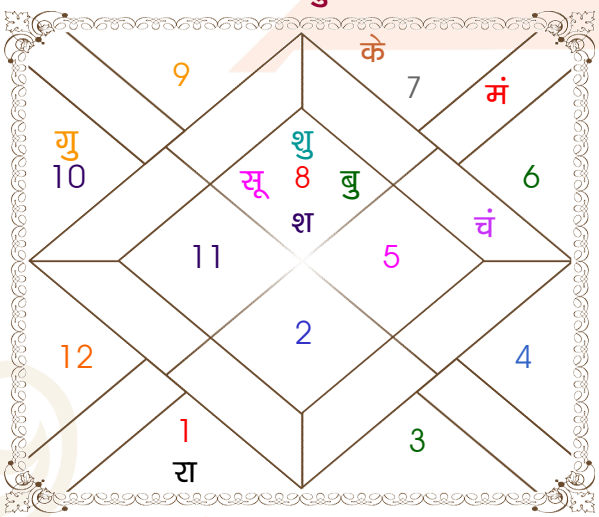

लग्न-चलित

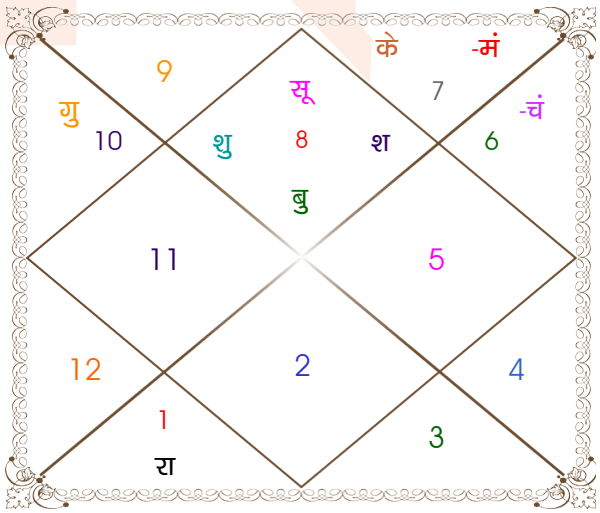

सुदर्शन चक्र

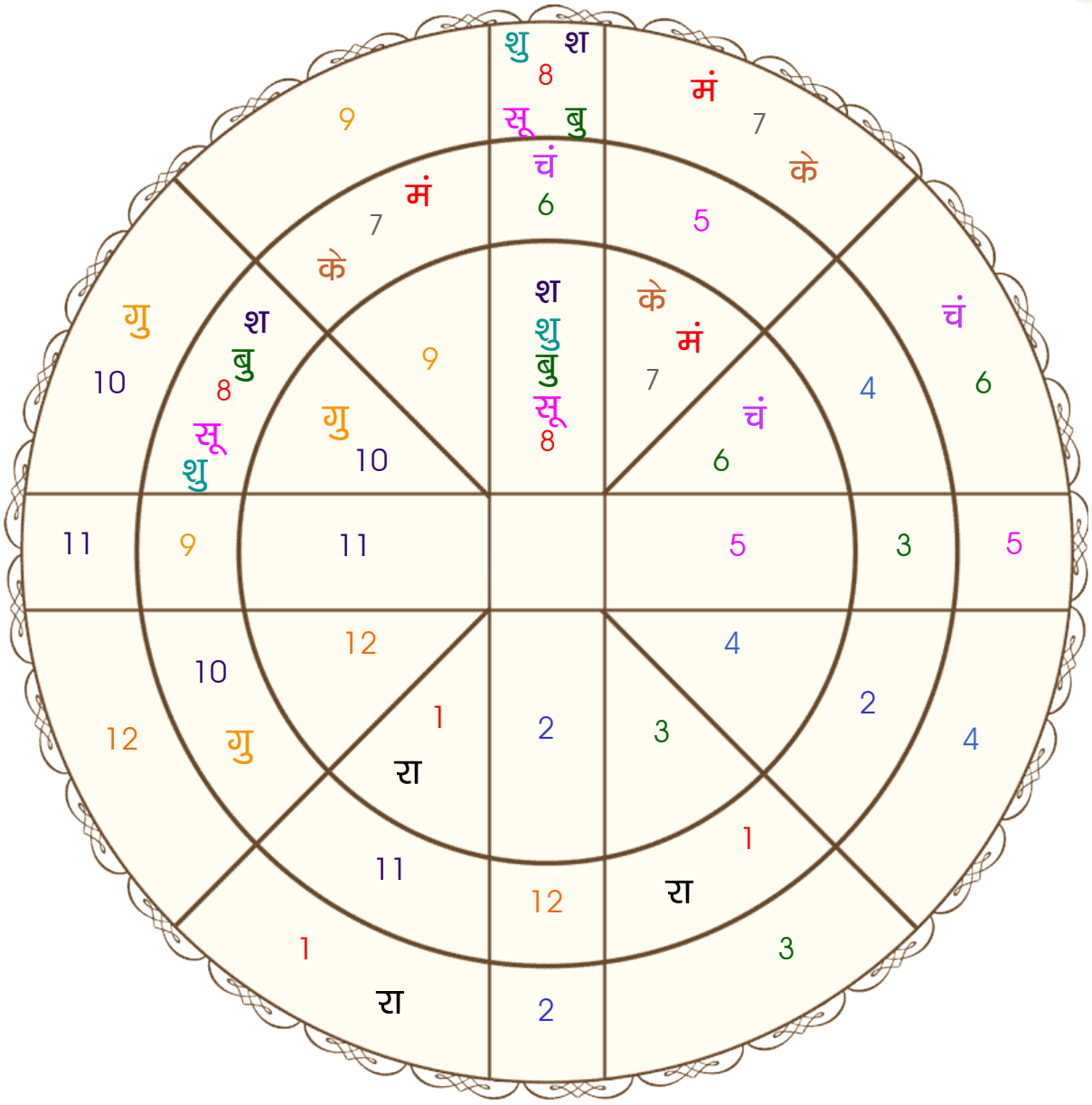

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : चन्द्र 6 वर्ष 0 मास 17 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		वृश्चि	21:30:06	मंगल	बुध	शुक्र	केतु
चंद्र		कन्या	15:16:15	बुध	चंद्र	गुरु	चंद्र
मंगल		तुला	01:46:08	शुक्र	मंगल	बुध	शनि
बुध	व	वृश्चि	05:20:41	मंगल	शनि	शनि	गुरु
गुरु		मक	19:50:16	शनि	चंद्र	केतु	शुक्र
शुक्र		वृश्चि	11:05:16	मंगल	शनि	चंद्र	चंद्र
शनि		वृश्चि	08:49:55	मंगल	शनि	शुक्र	मंगल
राहु		मेष	15:06:42	मंगल	शुक्र	शुक्र	बुध
केतु		तुला	15:06:42	शुक्र	राहु	केतु	शनि
हर्ष		वृश्चि	24:27:05	मंगल	बुध	राहु	गुरु
नेप		धनु	09:06:01	गुरु	केतु	गुरु	राहु
प्लूटो		तुला	12:39:07	शुक्र	राहु	बुध	बुध

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृश्चि	09:05:51	मंगल	शनि	शुक्र	राहु
2	धनु	15:14:31	गुरु	शुक्र	शुक्र	बुध
3	कुंभ	09:42:01	शनि	राहु	गुरु	शुक्र
4	मीन	18:43:19	गुरु	बुध	केतु	शुक्र
5	मेष	11:57:50	मंगल	केतु	बुध	शुक्र
6	मेष	27:25:06	मंगल	सूर्य	चंद्र	चंद्र
7	वृष	09:05:51	शुक्र	सूर्य	शुक्र	गुरु
8	मिथु	15:14:31	बुध	राहु	शुक्र	शुक्र
9	सिंह	09:42:01	सूर्य	केतु	शनि	बुध
10	कन्या	18:43:19	बुध	चंद्र	बुध	चंद्र
11	तुला	11:57:50	शुक्र	राहु	शनि	राहु
12	तुला	27:25:06	शुक्र	गुरु	शुक्र	राहु

के.पी. अयनांश : 23:33:27

फॉरच्युना : कन्या 02:52:00

लग्न कुंडली

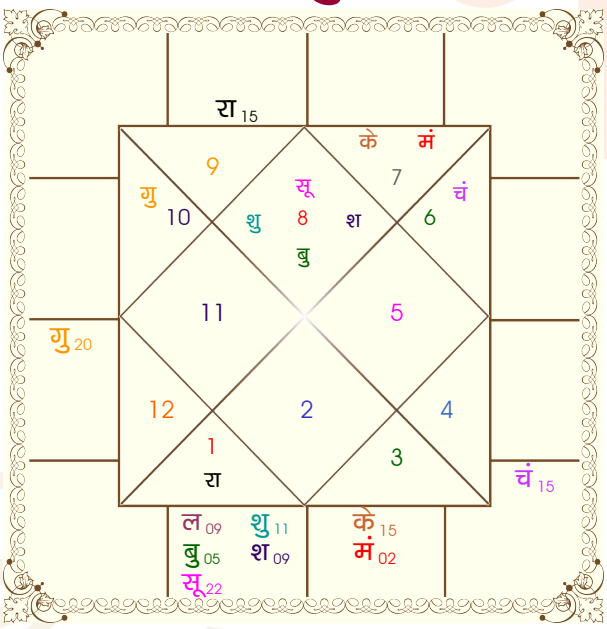

भाव कुंडली

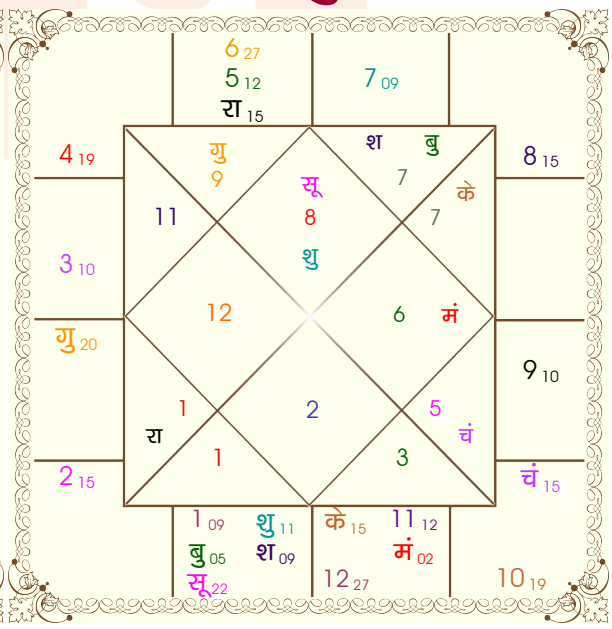

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य, मंगल, शुक्र, राहु,
2	गुरु,
3	बुध- शुक्र- शनि,
4	गुरु-
5	मंगल, राहु, केतु,
6	मंगल,
7	शुक्र- राहु-
8	सूर्य- बुध-
9	सूर्य- चंद्र+ गुरु,
10	सूर्य- मंगल+ बुध-
11	शुक्र- राहु- केतु,
12	सूर्य, बुध+ शुक्र+ शनि+ राहु-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1, 8- 9- 10- 12,
चंद्र	9+
मंगल	1, 5, 6, 10+
बुध	3- 8- 10- 12+
गुरु	2, 4- 9,
शुक्र	1, 3- 7- 11- 12+
शनि	3, 12+
राहु	1, 5, 7- 11- 12-
केतु	5, 11,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

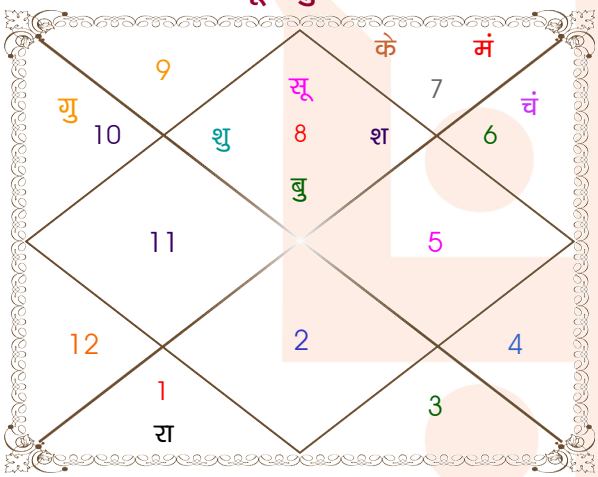

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

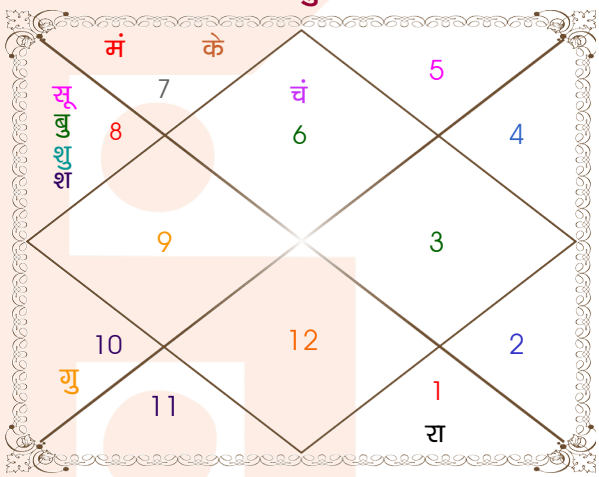

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

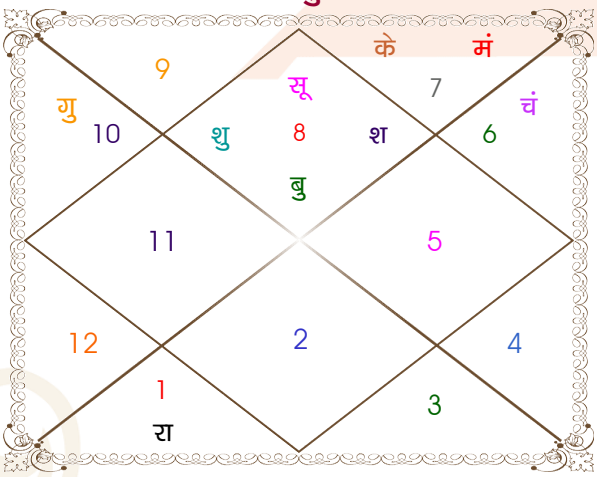

देह विचारः

होरा कुंडली

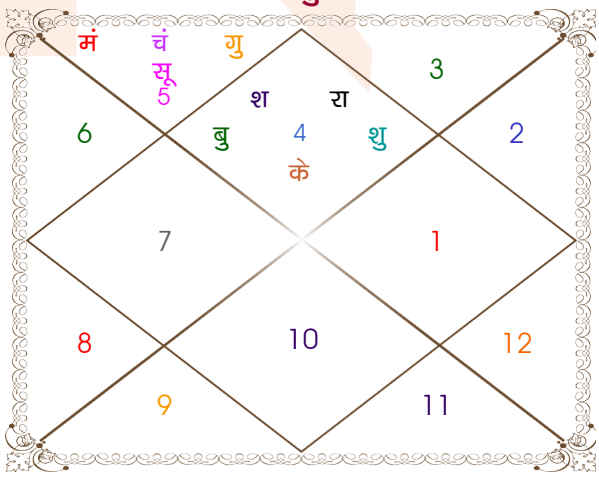

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

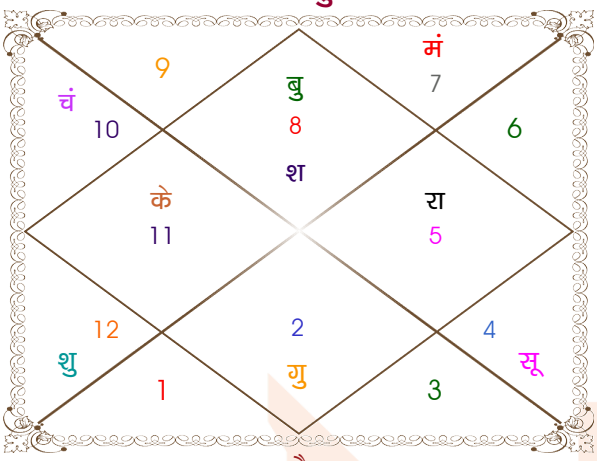

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

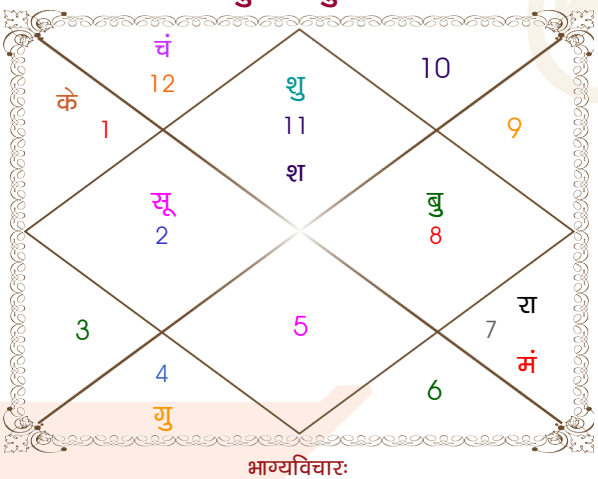

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

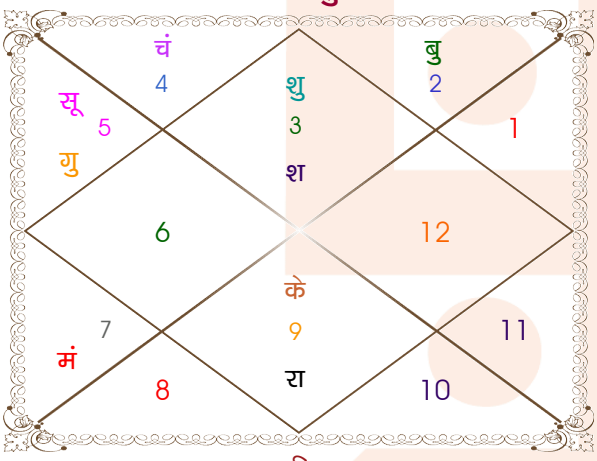

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

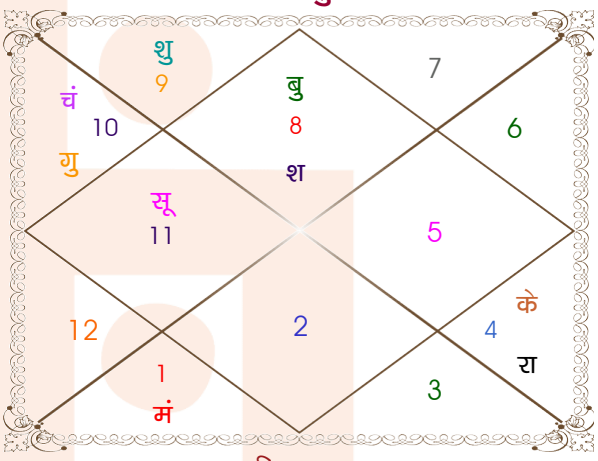

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

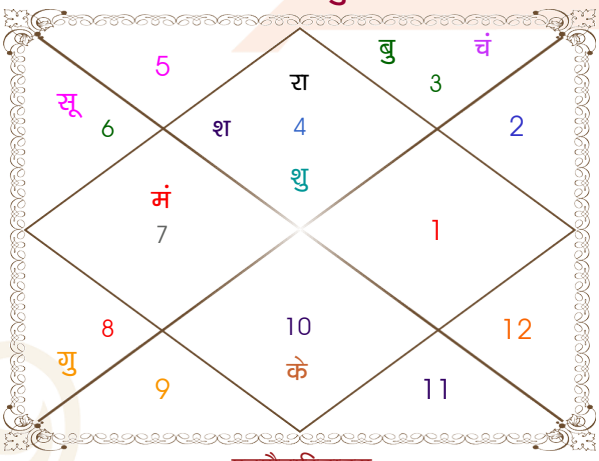

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

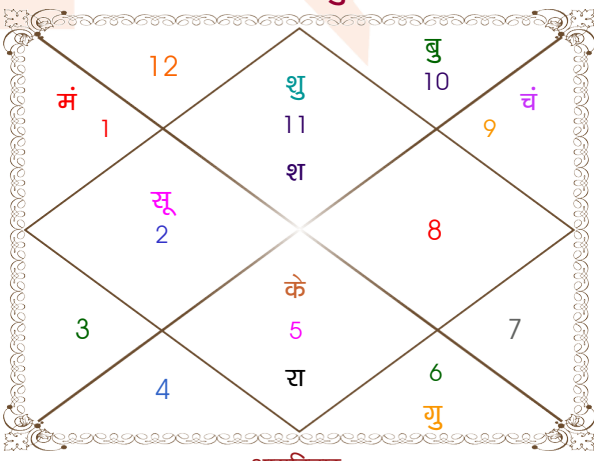

आयुविचारः

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

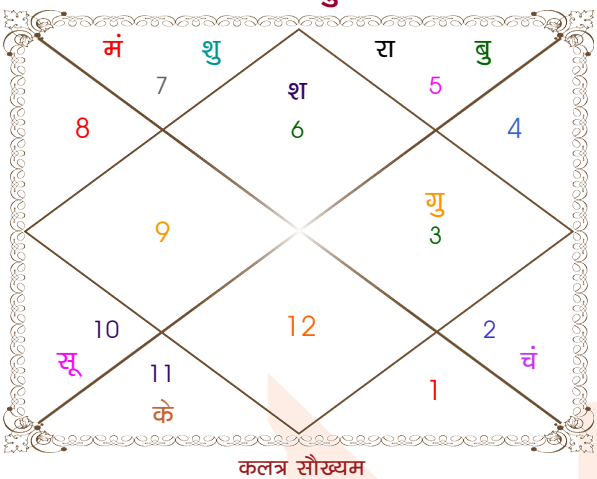

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

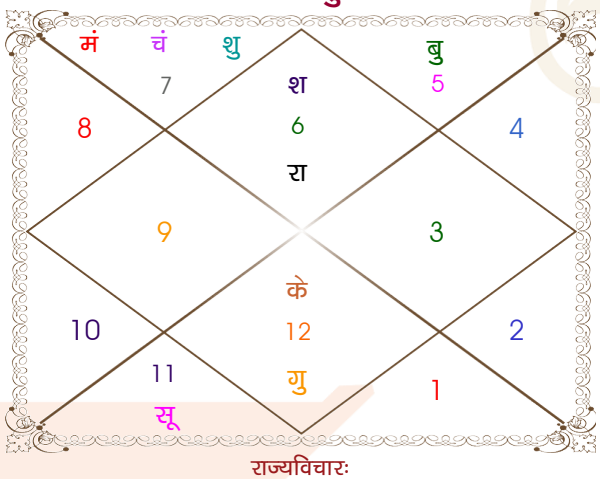

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

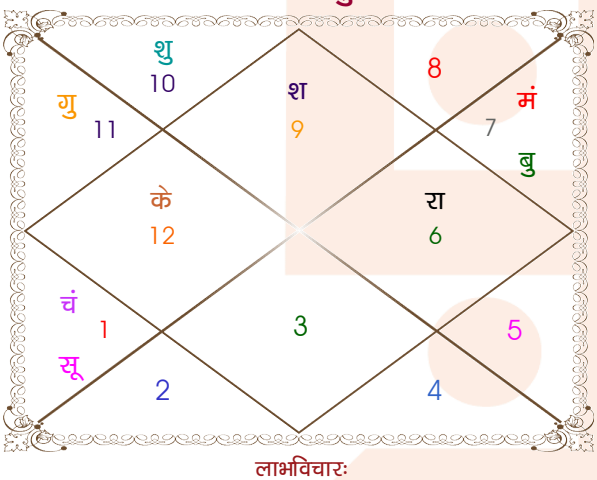

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

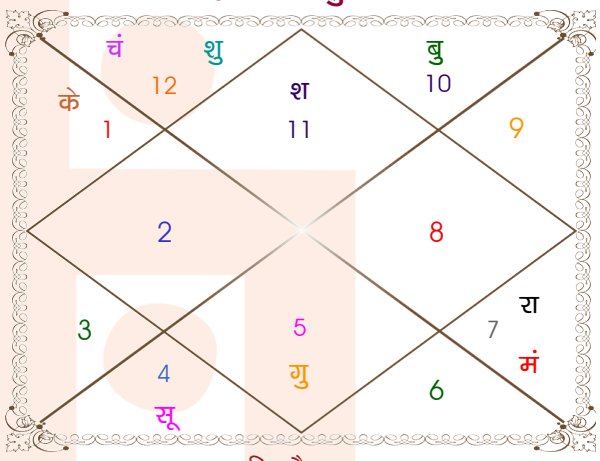

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

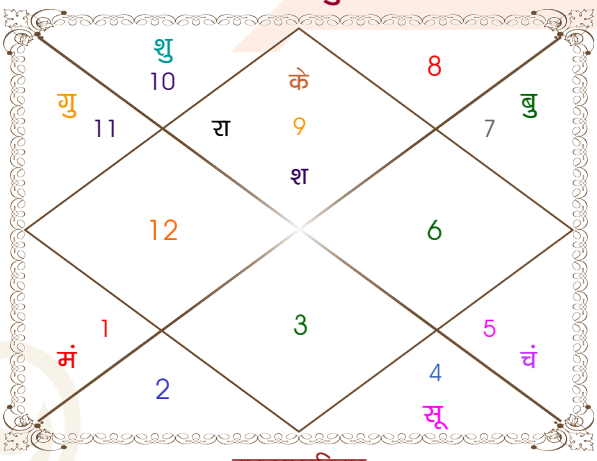

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

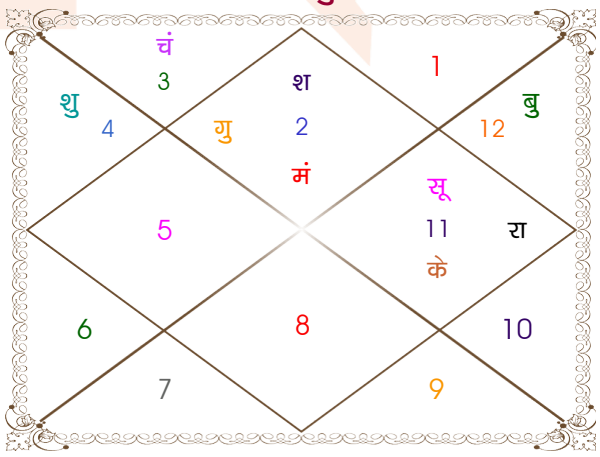

उपासनाज्ञानम्

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

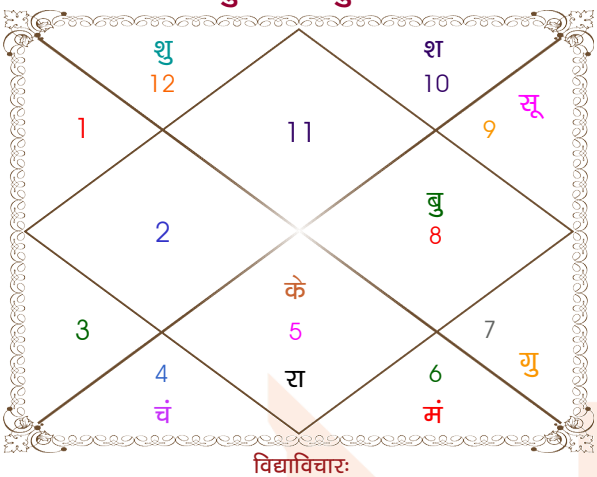

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

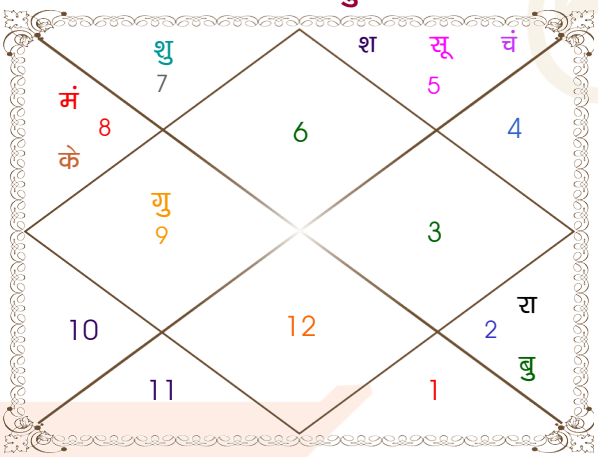

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

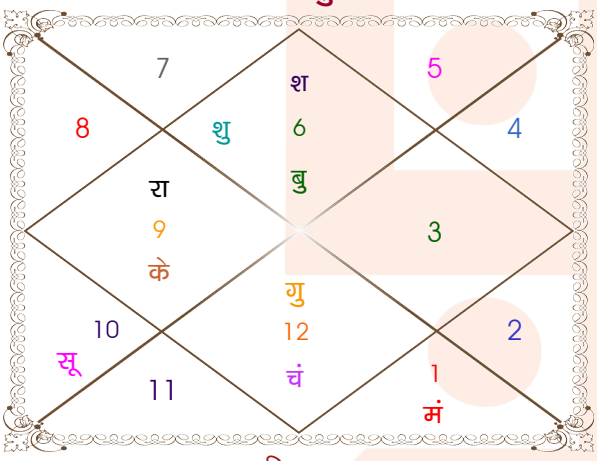

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

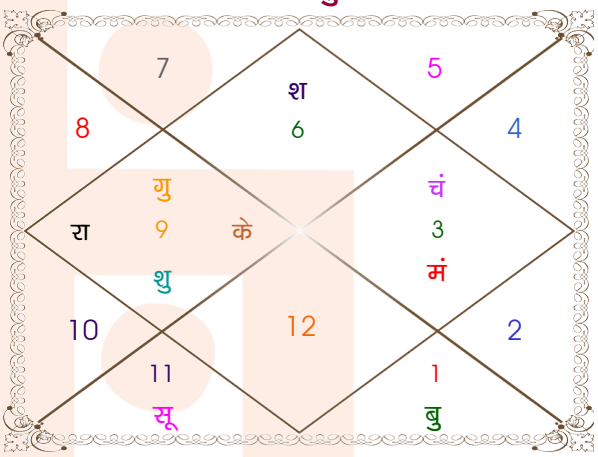

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

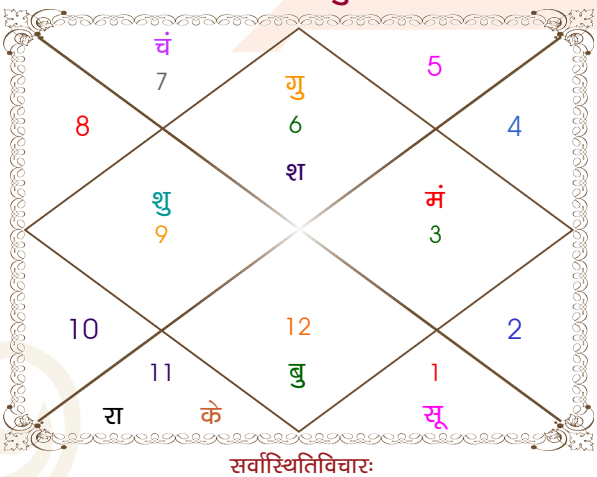

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

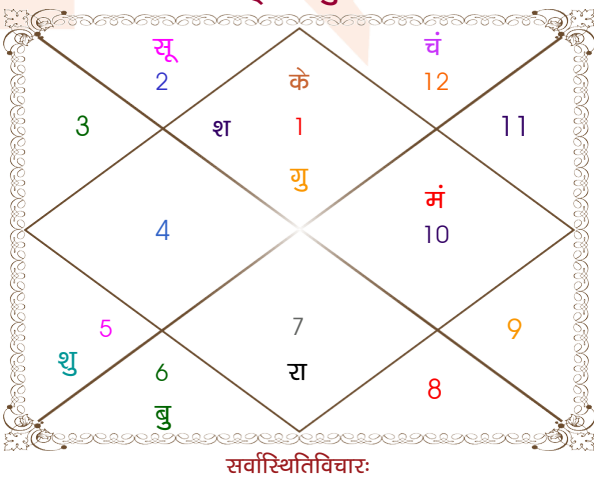

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृश्चि	वृश्चि	कन्या	तुला	वृश्चि	मक	वृश्चि	वृश्चि	मेष	तुला
होरा	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	वृश्चि	कर्क	मक	तुला	वृश्चि	वृष	मीन	वृश्चि	सिंह	कुंभ
चतुर्थांश	कुंभ	वृष	मीन	तुला	वृश्चि	कर्क	कुंभ	कुंभ	तुला	मेष
सप्तमांश	कर्क	कन्या	मिथु	तुला	मिथु	वृश्चि	कर्क	कर्क	कर्क	मक
नवमांश	कन्या	मक	वृष	तुला	सिंह	मिथु	तुला	कन्या	सिंह	कुंभ
दशमांश	कन्या	कुंभ	तुला	तुला	सिंह	मीन	तुला	कन्या	कन्या	मीन
द्वादशांश	कुंभ	कर्क	मीन	तुला	मक	सिंह	मीन	कुंभ	तुला	मेष
षोडशांश	धनु	कर्क	सिंह	मेष	तुला	कुंभ	मक	धनु	धनु	धनु
विंशांश	वृष	कुंभ	मिथु	वृष	मीन	वृष	कर्क	वृष	कुंभ	कुंभ
चतुर्विंशांश	कुंभ	धनु	कर्क	कन्या	वृश्चि	तुला	मीन	मक	सिंह	सिंह
सप्तविंशांश	कन्या	सिंह	सिंह	वृश्चि	वृष	धनु	तुला	सिंह	वृष	वृश्चि
त्रिंशांश	कन्या	मक	मीन	मेष	कन्या	मीन	कन्या	कन्या	धनु	धनु
खवेदांश	कन्या	कुंभ	मिथु	मिथु	मेष	धनु	धनु	कन्या	धनु	धनु
अक्षवेदांश	कन्या	मेष	तुला	मिथु	मीन	कन्या	धनु	कन्या	कुंभ	कुंभ
षष्ट्यंश	मेष	वृष	मीन	मक	कन्या	मेष	सिंह	मेष	तुला	मेष

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
मंगल	1 ---	1 ---	3 उत्तम	4 नागपुष्प
बुध	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
गुरु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	5 कन्दुक
शुक्र	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	6 केरल
शनि	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
राहु	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
केतु	1 ---	1 ---	3 उत्तम	4 नागपुष्प

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	14.30	15.00	15.55	12.70	13.60	15.50	11.00	6.00	12.65
सप्तवर्ग	13.25	15.23	15.55	13.45	14.35	14.75	11.00	6.00	12.25
दशवर्ग	11.15	12.93	15.98	14.90	16.43	11.75	11.13	8.28	12.33
षोडशवर्ग	11.38	14.00	15.65	14.43	15.03	12.63	11.13	8.43	12.40

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
शुक्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु
केतु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	सम
बुध	सम	सम	मित्र	---	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	---	सम	मित्र	मित्र	मित्र
शुक्र	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	मित्र	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	सम	सम	सम	मित्र	सम	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	14	16	21	43	5	15	54
सप्तवर्गज बल	105	105	128	109	128	98	75
ओजयुग्मक बल	0	30	30	15	15	15	0
केन्द्र बल	60	30	15	60	15	60	60
द्रेष्काण बल	0	0	15	0	0	0	0
कुल स्थान बल	179	181	209	227	162	187	189
कुल दिग्बल	39	1	56	59	36	17	0
नतोन्नत बल	39	21	21	60	39	39	21
पक्ष बल	38	76	38	38	22	22	38
त्रिभाग बल	0	0	60	0	60	0	0
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	0	0	0	0	45	0
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	2	35	17	56	8	3	57
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	94	131	136	214	129	109	145
कुल चेष्टाबल	0	0	21	43	22	6	6
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-8	7	14	-1	-42	-3	-2
कुल षट्बल	364	372	452	567	342	360	346
रूप षट्बल	6.1	6.2	7.5	9.5	5.7	6.0	5.8
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.2	1.0	1.5	1.4	0.9	1.1	1.2
संबंधित पद	3	6	1	2	7	5	4

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	8.29	18.76	21.10	43.22	10.32	9.54	17.52
कष्ट फल	50.42	40.88	38.90	16.78	45.95	49.38	18.41

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	452	342	346	342	452	452	360	567	364	567	360	360
भावदिग्बल	0	20	40	60	10	20	30	10	50	30	40	50
भावदृष्टि बल	1	-11	17	1	1	53	61	23	62	30	52	13
कुल भाव बल	453	351	403	403	462	525	451	600	476	627	452	422
रूप भाव बल	7.6	5.9	6.7	6.7	7.7	8.8	7.5	10.0	7.9	10.5	7.5	7.0
संबंधित पद	6	12	11	10	5	3	8	2	4	1	7	9

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृश्चि	08:59:51	--	--	अनुराधा	2	17
गुलिक	गु	सिंह	26:33:59	--	--	पू०फाल्गुनी	4	11
काल	का	कन्या	17:20:41	--	--	हस्त	3	13
मृत्यु	मृ	तुला	28:32:13	--	--	विशाखा	3	16
यमघंटक	यम	कर्क	15:31:22	--	--	पुष्य	4	8
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मिथु	24:03:59	--	मूल	पुनर्वसु	2	7
धूम	धू	मेष	04:44:05	--	--	अश्विनी	2	1
व्यतिपात	व्य	मीन	25:15:55	--	--	रेवती	3	27
परिवेश	परि	कन्या	25:15:55	--	--	चित्रा	1	14
इन्द्रचाप	इ	तुला	04:44:05	--	--	चित्रा	4	14
उपकेतु	उप	तुला	21:24:05	--	--	विशाखा	1	16

प्राणपद	:	कन्या	12:42:20	कारकाँश लग्न	:	मक	12:36:49
भाव लग्न	:	तुला	23:33:45	होरा लग्न	:	तुला	08:07:40
घटी लग्न	:	कन्या	04:13:39	वर्णद लग्न	:	कुंभ	12:52:29

उपग्रह कुंडली

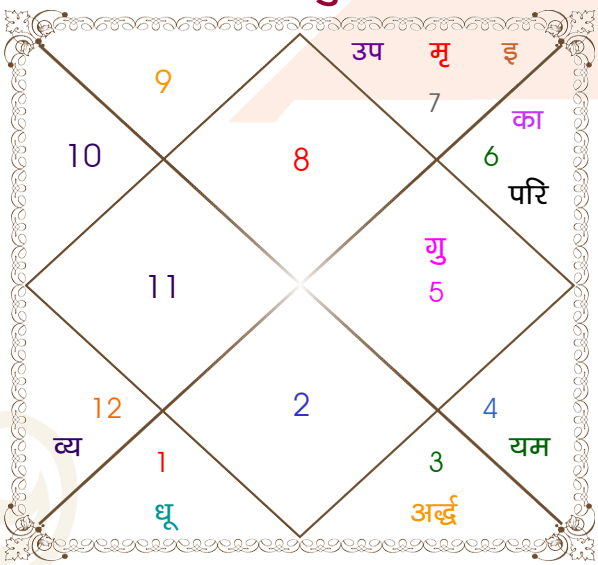

आरूढ़ कुंडली

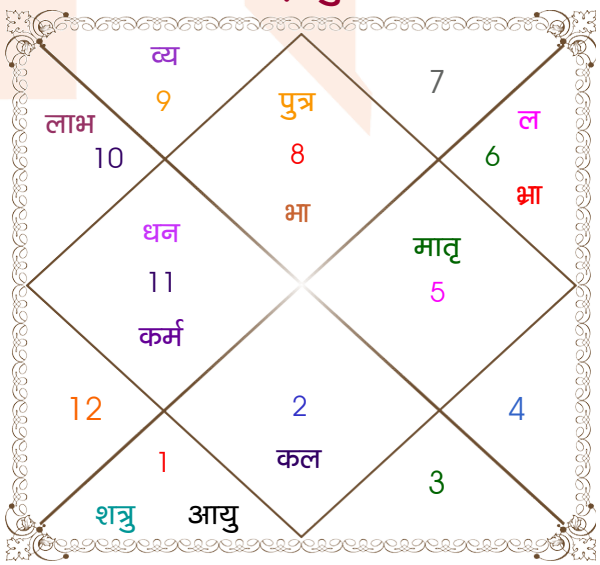

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	वृश	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	6
कुल	5	2	3	4	1	4	5	5	5	5	5	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कुल
शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
गुरु	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	6
शुक्र	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
कुल	6	1	4	1	6	5	5	4	4	3	4	6	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	तु	वृश	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	5
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
कुल	3	5	1	4	2	2	5	2	3	3	4	5	39

बुध का अष्टकवर्ग

	वृश	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	6
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	7
कुल	6	5	3	4	3	5	2	6	6	5	5	4	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश	ध	कुल
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	9
शुक्र	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	6
बुध	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	9
कुल	5	4	6	6	4	1	7	6	4	4	5	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	वृश	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	5
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	9
लग्न	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
कुल	4	4	6	3	5	2	2	5	5	5	8	3	52

शनि का अष्टकवर्ग

	वृश	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	3
बुध	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	6
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
कुल	4	3	2	4	2	4	2	3	3	4	6	2	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृश	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	5
सूर्य	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	6
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	7
बुध	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	3	5	6	2	5	1	4	4	6	5	3	49

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	2	3	3	4	6	2	4	3	2	4	2	39
गुरु	6	4	1	7	6	4	4	5	4	5	4	6	56
मंगल	5	2	3	3	4	5	3	5	1	4	2	2	39
सूर्य	4	5	5	5	5	5	4	5	2	3	4	1	48
शुक्र	2	2	5	5	5	8	3	4	4	6	3	5	52
बुध	5	2	6	6	5	5	4	6	5	3	4	3	54
चंद्र	4	4	3	4	6	6	1	4	1	6	5	5	49
बिन्दु	30	21	26	33	35	39	21	33	20	29	26	24	337
रेखा	26	35	30	23	21	17	35	23	36	27	30	32	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	1	1	1	4	0	2	0	0	2	0	12
गुरु	2	0	0	2	2	0	3	0	0	1	3	1	14
मंगल	4	0	1	1	3	3	1	3	0	2	0	0	18
सूर्य	2	2	1	4	3	2	0	4	0	0	0	0	18
शुक्र	0	0	2	1	3	6	0	0	2	4	0	1	19
बुध	0	0	2	3	0	3	0	3	0	1	0	0	12
चंद्र	3	0	2	0	5	2	0	0	0	2	4	1	19
रेखा	12	2	9	12	17	20	4	12	2	10	9	3	112

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	1	1	4	0	2	0	0	2	0	10
गुरु	2	0	0	2	2	0	3	0	0	1	2	1	13
मंगल	1	0	0	1	3	3	1	3	0	2	0	0	14
सूर्य	0	2	0	4	3	2	0	4	0	0	0	0	15
शुक्र	0	0	0	1	3	6	0	0	1	4	0	1	16
बुध	0	0	0	3	0	3	0	3	0	1	0	0	10
चंद्र	3	0	0	0	5	2	0	0	0	2	2	1	15
रेखा	6	2	0	12	17	20	4	12	1	10	6	3	93

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	108	125	97	56	102	105	72
ग्रह पिंड	98	30	109	91	34	70	64
शोध्य पिंड	206	155	206	147	136	175	136

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

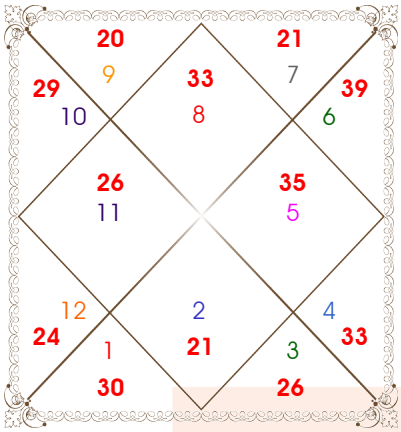

सूर्य का अष्टकवर्ग

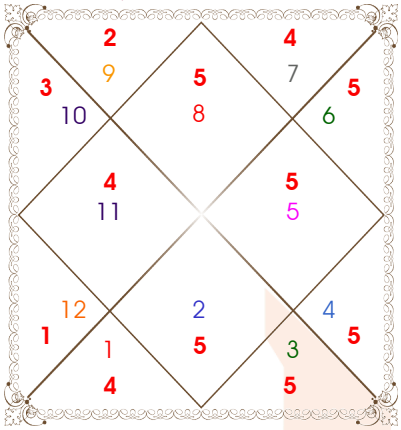

चंद्र का अष्टकवर्ग

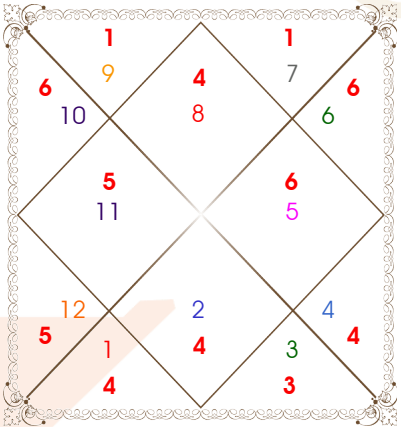

मंगल का अष्टकवर्ग

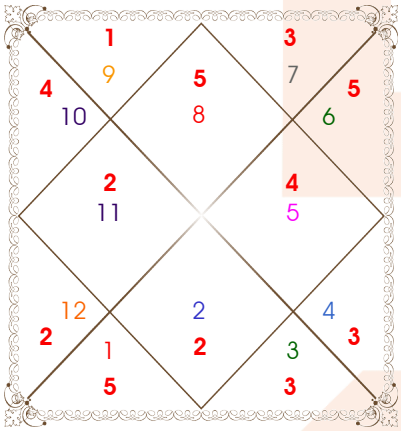

बुध का अष्टकवर्ग

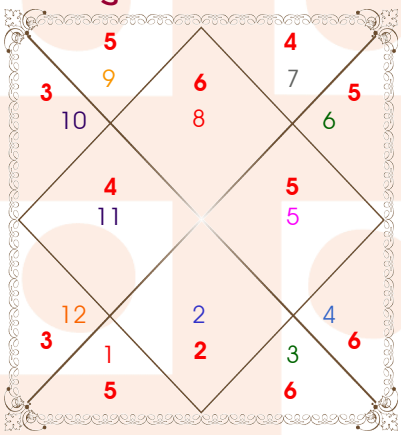

गुरू का अष्टकवर्ग

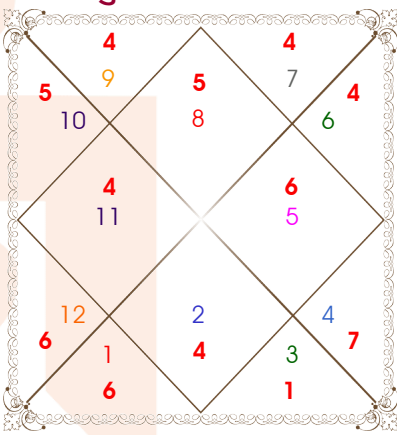

शुक्र का अष्टकवर्ग

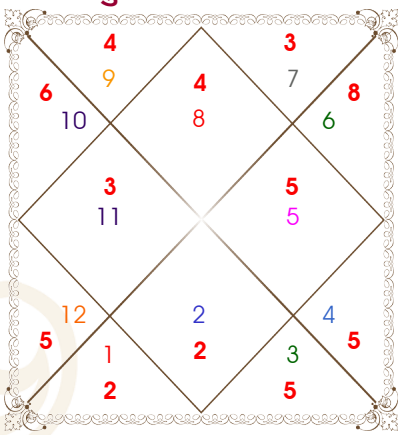

शनि का अष्टकवर्ग

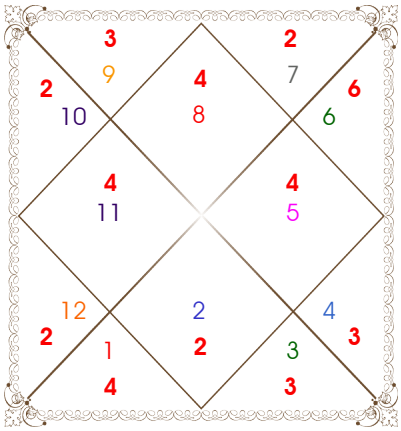

लग्न का अष्टकवर्ग

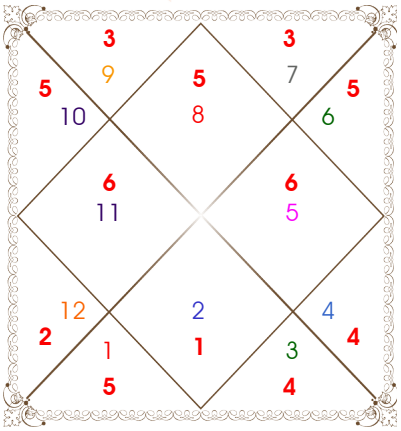

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 6 वर्ष 1 मास 14 दिन

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
07/12/1985		21/01/1992		21/01/1999		20/01/2017		20/01/2033	
21/01/1992		21/01/1999		20/01/2017		20/01/2033		21/01/2052	
	00/00/0000	मंगल	18/06/1992	राहु	03/10/2001	गुरु	10/03/2019	शनि	24/01/2036
	00/00/0000	राहु	07/07/1993	गुरु	26/02/2004	शनि	21/09/2021	बुध	03/10/2038
	07/12/1985	गुरु	12/06/1994	शनि	02/01/2007	बुध	28/12/2023	केतु	12/11/2039
गुरु	22/04/1986	शनि	22/07/1995	बुध	22/07/2009	केतु	02/12/2024	शुक्र	12/01/2043
शनि	21/11/1987	बुध	18/07/1996	केतु	09/08/2010	शुक्र	03/08/2027	सूर्य	24/12/2043
बुध	21/04/1989	केतु	15/12/1996	शुक्र	09/08/2013	सूर्य	22/05/2028	चंद्र	25/07/2045
केतु	21/11/1989	शुक्र	14/02/1998	सूर्य	04/07/2014	चंद्र	21/09/2029	मंगल	03/09/2046
शुक्र	22/07/1991	सूर्य	22/06/1998	चंद्र	03/01/2016	मंगल	28/08/2030	राहु	10/07/2049
सूर्य	21/01/1992	चंद्र	21/01/1999	मंगल	20/01/2017	राहु	20/01/2033	गुरु	21/01/2052

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
21/01/2052		20/01/2069		21/01/2076		21/01/2096		21/01/2102	
20/01/2069		21/01/2076		21/01/2096		21/01/2102		00/00/0000	
बुध	19/06/2054	केतु	18/06/2069	शुक्र	22/05/2079	सूर्य	09/05/2096	चंद्र	22/11/2102
केतु	16/06/2055	शुक्र	18/08/2070	सूर्य	22/05/2080	चंद्र	08/11/2096	मंगल	23/06/2103
शुक्र	16/04/2058	सूर्य	24/12/2070	चंद्र	20/01/2082	मंगल	16/03/2097	राहु	22/12/2104
सूर्य	20/02/2059	चंद्र	25/07/2071	मंगल	23/03/2083	राहु	08/02/2098	गुरु	08/12/2105
चंद्र	22/07/2060	मंगल	21/12/2071	राहु	22/03/2086	गुरु	27/11/2098		00/00/0000
मंगल	19/07/2061	राहु	08/01/2073	गुरु	20/11/2088	शनि	09/11/2099		00/00/0000
राहु	05/02/2064	गुरु	15/12/2073	शनि	21/01/2092	बुध	15/09/2100		00/00/0000
गुरु	13/05/2066	शनि	24/01/2075	बुध	21/11/2094	केतु	21/01/2101		00/00/0000
शनि	20/01/2069	बुध	21/01/2076	केतु	21/01/2096	शुक्र	21/01/2102		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 6 वर्ष 1 मा 3 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
07/12/1985		22/04/1986		21/11/1987		21/04/1989		21/11/1989	
22/04/1986		21/11/1987		21/04/1989		21/11/1989		22/07/1991	
	00/00/0000	शनि	22/07/1986	बुध	02/02/1988	केतु	04/05/1989	शुक्र	02/03/1990
	00/00/0000	बुध	12/10/1986	केतु	04/03/1988	शुक्र	08/06/1989	सूर्य	01/04/1990
	00/00/0000	केतु	15/11/1986	शुक्र	29/05/1988	सूर्य	19/06/1989	चंद्र	22/05/1990
	00/00/0000	शुक्र	19/02/1987	सूर्य	24/06/1988	चंद्र	07/07/1989	मंगल	27/06/1990
	00/00/0000	सूर्य	20/03/1987	चंद्र	06/08/1988	मंगल	19/07/1989	राहु	26/09/1990
	07/12/1985	चंद्र	07/05/1987	मंगल	05/09/1988	राहु	20/08/1989	गुरु	16/12/1990
चंद्र	10/01/1986	मंगल	10/06/1987	राहु	22/11/1988	गुरु	18/09/1989	शनि	23/03/1991
मंगल	08/02/1986	राहु	05/09/1987	गुरु	30/01/1989	शनि	21/10/1989	बुध	17/06/1991
राहु	22/04/1986	गुरु	21/11/1987	शनि	21/04/1989	बुध	21/11/1989	केतु	22/07/1991

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
22/07/1991		21/01/1992		18/06/1992		07/07/1993		12/06/1994	
21/01/1992		18/06/1992		07/07/1993		12/06/1994		22/07/1995	
सूर्य	31/07/1991	मंगल	30/01/1992	राहु	15/08/1992	गुरु	21/08/1993	शनि	16/08/1994
चंद्र	16/08/1991	राहु	21/02/1992	गुरु	05/10/1992	शनि	14/10/1993	बुध	12/10/1994
मंगल	26/08/1991	गुरु	12/03/1992	शनि	04/12/1992	बुध	01/12/1993	केतु	05/11/1994
राहु	23/09/1991	शनि	04/04/1992	बुध	28/01/1993	केतु	21/12/1993	शुक्र	11/01/1995
गुरु	17/10/1991	बुध	26/04/1992	केतु	19/02/1993	शुक्र	16/02/1994	सूर्य	31/01/1995
शनि	15/11/1991	केतु	04/05/1992	शुक्र	24/04/1993	सूर्य	05/03/1994	चंद्र	06/03/1995
बुध	11/12/1991	शुक्र	29/05/1992	सूर्य	13/05/1993	चंद्र	02/04/1994	मंगल	30/03/1995
केतु	21/12/1991	सूर्य	06/06/1992	चंद्र	14/06/1993	मंगल	22/04/1994	राहु	29/05/1995
शुक्र	21/01/1992	चंद्र	18/06/1992	मंगल	07/07/1993	राहु	12/06/1994	गुरु	22/07/1995

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
22/07/1995		18/07/1996		15/12/1996		14/02/1998		22/06/1998	
18/07/1996		15/12/1996		14/02/1998		22/06/1998		21/01/1999	
बुध	12/09/1995	केतु	27/07/1996	शुक्र	24/02/1997	सूर्य	20/02/1998	चंद्र	09/07/1998
केतु	03/10/1995	शुक्र	21/08/1996	सूर्य	17/03/1997	चंद्र	03/03/1998	मंगल	22/07/1998
शुक्र	02/12/1995	सूर्य	28/08/1996	चंद्र	21/04/1997	मंगल	10/03/1998	राहु	23/08/1998
सूर्य	20/12/1995	चंद्र	10/09/1996	मंगल	16/05/1997	राहु	29/03/1998	गुरु	20/09/1998
चंद्र	19/01/1996	मंगल	19/09/1996	राहु	19/07/1997	गुरु	15/04/1998	शनि	24/10/1998
मंगल	09/02/1996	राहु	11/10/1996	गुरु	14/09/1997	शनि	06/05/1998	बुध	23/11/1998
राहु	04/04/1996	गुरु	31/10/1996	शनि	21/11/1997	बुध	24/05/1998	केतु	05/12/1998
गुरु	22/05/1996	शनि	23/11/1996	बुध	20/01/1998	केतु	31/05/1998	शुक्र	10/01/1999
शनि	18/07/1996	बुध	15/12/1996	केतु	14/02/1998	शुक्र	22/06/1998	सूर्य	21/01/1999

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
21/01/1999		03/10/2001		26/02/2004		02/01/2007		22/07/2009	
03/10/2001		26/02/2004		02/01/2007		22/07/2009		09/08/2010	
राहु	18/06/1999	गुरु	28/01/2002	शनि	09/08/2004	बुध	14/05/2007	केतु	13/08/2009
गुरु	27/10/1999	शनि	15/06/2002	बुध	04/01/2005	केतु	08/07/2007	शुक्र	16/10/2009
शनि	31/03/2000	बुध	18/10/2002	केतु	05/03/2005	शुक्र	10/12/2007	सूर्य	04/11/2009
बुध	18/08/2000	केतु	08/12/2002	शुक्र	26/08/2005	सूर्य	25/01/2008	चंद्र	06/12/2009
केतु	14/10/2000	शुक्र	03/05/2003	सूर्य	17/10/2005	चंद्र	12/04/2008	मंगल	29/12/2009
शुक्र	28/03/2001	सूर्य	16/06/2003	चंद्र	12/01/2006	मंगल	05/06/2008	राहु	24/02/2010
सूर्य	16/05/2001	चंद्र	28/08/2003	मंगल	13/03/2006	राहु	23/10/2008	गुरु	16/04/2010
चंद्र	06/08/2001	मंगल	18/10/2003	राहु	17/08/2006	गुरु	24/02/2009	शनि	16/06/2010
मंगल	03/10/2001	राहु	26/02/2004	गुरु	02/01/2007	शनि	22/07/2009	बुध	09/08/2010

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
09/08/2010		09/08/2013		04/07/2014		03/01/2016		20/01/2017	
09/08/2013		04/07/2014		03/01/2016		20/01/2017		10/03/2019	
शुक्र	08/02/2011	सूर्य	25/08/2013	चंद्र	18/08/2014	मंगल	25/01/2016	गुरु	04/05/2017
सूर्य	04/04/2011	चंद्र	22/09/2013	मंगल	19/09/2014	राहु	23/03/2016	शनि	04/09/2017
चंद्र	04/07/2011	मंगल	11/10/2013	राहु	11/12/2014	गुरु	13/05/2016	बुध	24/12/2017
मंगल	06/09/2011	राहु	29/11/2013	गुरु	22/02/2015	शनि	12/07/2016	केतु	07/02/2018
राहु	17/02/2012	गुरु	12/01/2014	शनि	19/05/2015	बुध	05/09/2016	शुक्र	17/06/2018
गुरु	12/07/2012	शनि	05/03/2014	बुध	05/08/2015	केतु	27/09/2016	सूर्य	26/07/2018
शनि	02/01/2013	बुध	21/04/2014	केतु	06/09/2015	शुक्र	30/11/2016	चंद्र	29/09/2018
बुध	06/06/2013	केतु	10/05/2014	शुक्र	06/12/2015	सूर्य	19/12/2016	मंगल	13/11/2018
केतु	09/08/2013	शुक्र	04/07/2014	सूर्य	03/01/2016	चंद्र	20/01/2017	राहु	10/03/2019

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
10/03/2019		21/09/2021		28/12/2023		02/12/2024		03/08/2027	
21/09/2021		28/12/2023		02/12/2024		03/08/2027		22/05/2028	
शनि	04/08/2019	बुध	16/01/2022	केतु	16/01/2024	शुक्र	14/05/2025	सूर्य	18/08/2027
बुध	13/12/2019	केतु	05/03/2022	शुक्र	13/03/2024	सूर्य	01/07/2025	चंद्र	11/09/2027
केतु	05/02/2020	शुक्र	21/07/2022	सूर्य	30/03/2024	चंद्र	21/09/2025	मंगल	28/09/2027
शुक्र	08/07/2020	सूर्य	01/09/2022	चंद्र	28/04/2024	मंगल	16/11/2025	राहु	11/11/2027
सूर्य	23/08/2020	चंद्र	09/11/2022	मंगल	18/05/2024	राहु	12/04/2026	गुरु	20/12/2027
चंद्र	08/11/2020	मंगल	27/12/2022	राहु	08/07/2024	गुरु	19/08/2026	शनि	05/02/2028
मंगल	01/01/2021	राहु	30/04/2023	गुरु	22/08/2024	शनि	21/01/2027	बुध	17/03/2028
राहु	20/05/2021	गुरु	18/08/2023	शनि	15/10/2024	बुध	08/06/2027	केतु	03/04/2028
गुरु	21/09/2021	शनि	28/12/2023	बुध	02/12/2024	केतु	03/08/2027	शुक्र	22/05/2028

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
22/05/2028		21/09/2029		28/08/2030		20/01/2033		24/01/2036	
21/09/2029		28/08/2030		20/01/2033		24/01/2036		03/10/2038	
चंद्र	01/07/2028	मंगल	11/10/2029	राहु	06/01/2031	शनि	13/07/2033	बुध	11/06/2036
मंगल	30/07/2028	राहु	01/12/2029	गुरु	03/05/2031	बुध	16/12/2033	केतु	08/08/2036
राहु	11/10/2028	गुरु	15/01/2030	शनि	19/09/2031	केतु	18/02/2034	शुक्र	18/01/2037
गुरु	15/12/2028	शनि	10/03/2030	बुध	21/01/2032	शुक्र	20/08/2034	सूर्य	09/03/2037
शनि	02/03/2029	बुध	27/04/2030	केतु	12/03/2032	सूर्य	14/10/2034	चंद्र	29/05/2037
बुध	10/05/2029	केतु	17/05/2030	शुक्र	05/08/2032	चंद्र	14/01/2035	मंगल	26/07/2037
केतु	07/06/2029	शुक्र	13/07/2030	सूर्य	18/09/2032	मंगल	19/03/2035	राहु	20/12/2037
शुक्र	27/08/2029	सूर्य	30/07/2030	चंद्र	30/11/2032	राहु	30/08/2035	गुरु	30/04/2038
सूर्य	21/09/2029	चंद्र	28/08/2030	मंगल	20/01/2033	गुरु	24/01/2036	शनि	03/10/2038

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
03/10/2038		12/11/2039		12/01/2043		24/12/2043		25/07/2045	
12/11/2039		12/01/2043		24/12/2043		25/07/2045		03/09/2046	
केतु	27/10/2038	शुक्र	23/05/2040	सूर्य	29/01/2043	चंद्र	11/02/2044	मंगल	17/08/2045
शुक्र	02/01/2039	सूर्य	19/07/2040	चंद्र	27/02/2043	मंगल	15/03/2044	राहु	17/10/2045
सूर्य	22/01/2039	चंद्र	24/10/2040	मंगल	19/03/2043	राहु	10/06/2044	गुरु	10/12/2045
चंद्र	25/02/2039	मंगल	30/12/2040	राहु	10/05/2043	गुरु	26/08/2044	शनि	12/02/2046
मंगल	21/03/2039	राहु	22/06/2041	गुरु	25/06/2043	शनि	26/11/2044	बुध	11/04/2046
राहु	20/05/2039	गुरु	23/11/2041	शनि	19/08/2043	बुध	16/02/2045	केतु	04/05/2046
गुरु	13/07/2039	शनि	25/05/2042	बुध	07/10/2043	केतु	22/03/2045	शुक्र	11/07/2046
शनि	16/09/2039	बुध	05/11/2042	केतु	28/10/2043	शुक्र	26/06/2045	सूर्य	31/07/2046
बुध	12/11/2039	केतु	12/01/2043	शुक्र	24/12/2043	सूर्य	25/07/2045	चंद्र	03/09/2046

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
03/09/2046		10/07/2049		21/01/2052		19/06/2054		16/06/2055	
10/07/2049		21/01/2052		19/06/2054		16/06/2055		16/04/2058	
राहु	06/02/2047	गुरु	10/11/2049	बुध	25/05/2052	केतु	10/07/2054	शुक्र	05/12/2055
गुरु	25/06/2047	शनि	05/04/2050	केतु	15/07/2052	शुक्र	08/09/2054	सूर्य	26/01/2056
शनि	06/12/2047	बुध	15/08/2050	शुक्र	08/12/2052	सूर्य	26/09/2054	चंद्र	21/04/2056
बुध	02/05/2048	केतु	08/10/2050	सूर्य	21/01/2053	चंद्र	26/10/2054	मंगल	21/06/2056
केतु	02/07/2048	शुक्र	11/03/2051	चंद्र	05/04/2053	मंगल	16/11/2054	राहु	23/11/2056
शुक्र	22/12/2048	सूर्य	26/04/2051	मंगल	26/05/2053	राहु	10/01/2055	गुरु	10/04/2057
सूर्य	12/02/2049	चंद्र	12/07/2051	राहु	05/10/2053	गुरु	27/02/2055	शनि	21/09/2057
चंद्र	10/05/2049	मंगल	04/09/2051	गुरु	30/01/2054	शनि	25/04/2055	बुध	14/02/2058
मंगल	10/07/2049	राहु	21/01/2052	शनि	19/06/2054	बुध	16/06/2055	केतु	16/04/2058

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु	
16/04/2058		20/02/2059		22/07/2060		19/07/2061		05/02/2064	
20/02/2059		22/07/2060		19/07/2061		05/02/2064		13/05/2066	
सूर्य	01/05/2058	चंद्र	04/04/2059	मंगल	12/08/2060	राहु	05/12/2061	गुरु	25/05/2064
चंद्र	27/05/2058	मंगल	04/05/2059	राहु	05/10/2060	गुरु	09/04/2062	शनि	04/10/2064
मंगल	14/06/2058	राहु	21/07/2059	गुरु	22/11/2060	शनि	03/09/2062	बुध	29/01/2065
राहु	31/07/2058	गुरु	28/09/2059	शनि	19/01/2061	बुध	13/01/2063	केतु	18/03/2065
गुरु	10/09/2058	शनि	19/12/2059	बुध	11/03/2061	केतु	08/03/2063	शुक्र	03/08/2065
शनि	29/10/2058	बुध	01/03/2060	केतु	01/04/2061	शुक्र	11/08/2063	सूर्य	14/09/2065
बुध	12/12/2058	केतु	31/03/2060	शुक्र	31/05/2061	सूर्य	26/09/2063	चंद्र	22/11/2065
केतु	30/12/2058	शुक्र	26/06/2060	सूर्य	19/06/2061	चंद्र	13/12/2063	मंगल	09/01/2066
शुक्र	20/02/2059	सूर्य	22/07/2060	चंद्र	19/07/2061	मंगल	05/02/2064	राहु	13/05/2066

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
13/05/2066		20/01/2069		18/06/2069		18/08/2070		24/12/2070	
20/01/2069		18/06/2069		18/08/2070		24/12/2070		25/07/2071	
शनि	16/10/2066	केतु	29/01/2069	शुक्र	28/08/2069	सूर्य	25/08/2070	चंद्र	11/01/2071
बुध	04/03/2067	शुक्र	23/02/2069	सूर्य	19/09/2069	चंद्र	04/09/2070	मंगल	23/01/2071
केतु	30/04/2067	सूर्य	02/03/2069	चंद्र	24/10/2069	मंगल	12/09/2070	राहु	24/02/2071
शुक्र	11/10/2067	चंद्र	15/03/2069	मंगल	18/11/2069	राहु	01/10/2070	गुरु	25/03/2071
सूर्य	29/11/2067	मंगल	23/03/2069	राहु	21/01/2070	गुरु	18/10/2070	शनि	28/04/2071
चंद्र	19/02/2068	राहु	15/04/2069	गुरु	19/03/2070	शनि	07/11/2070	बुध	28/05/2071
मंगल	17/04/2068	गुरु	05/05/2069	शनि	25/05/2070	बुध	25/11/2070	केतु	09/06/2071
राहु	11/09/2068	शनि	28/05/2069	बुध	25/07/2070	केतु	03/12/2070	शुक्र	15/07/2071
गुरु	20/01/2069	बुध	18/06/2069	केतु	18/08/2070	शुक्र	24/12/2070	सूर्य	25/07/2071

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
25/07/2071		21/12/2071		08/01/2073		15/12/2073		24/01/2075	
21/12/2071		08/01/2073		15/12/2073		24/01/2075		21/01/2076	
मंगल	03/08/2071	राहु	17/02/2072	गुरु	22/02/2073	शनि	17/02/2074	बुध	16/03/2075
राहु	25/08/2071	गुरु	08/04/2072	शनि	17/04/2073	बुध	15/04/2074	केतु	06/04/2075
गुरु	14/09/2071	शनि	08/06/2072	बुध	05/06/2073	केतु	09/05/2074	शुक्र	05/06/2075
शनि	08/10/2071	बुध	01/08/2072	केतु	25/06/2073	शुक्र	15/07/2074	सूर्य	24/06/2075
बुध	29/10/2071	केतु	24/08/2072	शुक्र	20/08/2073	सूर्य	05/08/2074	चंद्र	24/07/2075
केतु	07/11/2071	शुक्र	26/10/2072	सूर्य	06/09/2073	चंद्र	07/09/2074	मंगल	14/08/2075
शुक्र	02/12/2071	सूर्य	15/11/2072	चंद्र	05/10/2073	मंगल	01/10/2074	राहु	07/10/2075
सूर्य	09/12/2071	चंद्र	17/12/2072	मंगल	25/10/2073	राहु	01/12/2074	गुरु	25/11/2075
चंद्र	21/12/2071	मंगल	08/01/2073	राहु	15/12/2073	गुरु	24/01/2075	शनि	21/01/2076

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
21/01/2076		22/05/2079		22/05/2080		20/01/2082		23/03/2083	
22/05/2079		22/05/2080		20/01/2082		23/03/2083		22/03/2086	
शुक्र	11/08/2076	सूर्य	10/06/2079	चंद्र	11/07/2080	मंगल	14/02/2082	राहु	03/09/2083
सूर्य	11/10/2076	चंद्र	10/07/2079	मंगल	16/08/2080	राहु	19/04/2082	गुरु	27/01/2084
चंद्र	20/01/2077	मंगल	31/07/2079	राहु	15/11/2080	गुरु	15/06/2082	शनि	18/07/2084
मंगल	01/04/2077	राहु	24/09/2079	गुरु	04/02/2081	शनि	21/08/2082	बुध	21/12/2084
राहु	01/10/2077	गुरु	12/11/2079	शनि	12/05/2081	बुध	21/10/2082	केतु	23/02/2085
गुरु	12/03/2078	शनि	09/01/2080	बुध	06/08/2081	केतु	15/11/2082	शुक्र	24/08/2085
शनि	21/09/2078	बुध	29/02/2080	केतु	10/09/2081	शुक्र	25/01/2083	सूर्य	18/10/2085
बुध	12/03/2079	केतु	22/03/2080	शुक्र	21/12/2081	सूर्य	15/02/2083	चंद्र	17/01/2086
केतु	22/05/2079	शुक्र	22/05/2080	सूर्य	20/01/2082	चंद्र	23/03/2083	मंगल	22/03/2086

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
22/03/2086		20/11/2088		21/01/2092		21/11/2094		21/01/2096	
20/11/2088		21/01/2092		21/11/2094		21/01/2096		09/05/2096	
गुरु	30/07/2086	शनि	22/05/2089	बुध	15/06/2092	केतु	16/12/2094	सूर्य	26/01/2096
शनि	31/12/2086	बुध	02/11/2089	केतु	15/08/2092	शुक्र	25/02/2095	चंद्र	05/02/2096
बुध	18/05/2087	केतु	09/01/2090	शुक्र	03/02/2093	सूर्य	18/03/2095	मंगल	11/02/2096
केतु	14/07/2087	शुक्र	20/07/2090	सूर्य	27/03/2093	चंद्र	22/04/2095	राहु	27/02/2096
शुक्र	23/12/2087	सूर्य	16/09/2090	चंद्र	21/06/2093	मंगल	17/05/2095	गुरु	13/03/2096
सूर्य	10/02/2088	चंद्र	22/12/2090	मंगल	21/08/2093	राहु	20/07/2095	शनि	30/03/2096
चंद्र	01/05/2088	मंगल	27/02/2091	राहु	23/01/2094	गुरु	15/09/2095	बुध	15/04/2096
मंगल	27/06/2088	राहु	20/08/2091	गुरु	10/06/2094	शनि	22/11/2095	केतु	21/04/2096
राहु	20/11/2088	गुरु	21/01/2092	शनि	21/11/2094	बुध	21/01/2096	शुक्र	09/05/2096

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
09/05/2096		08/11/2096		16/03/2097		08/02/2098		27/11/2098	
08/11/2096		16/03/2097		08/02/2098		27/11/2098		09/11/2099	
चंद्र	25/05/2096	मंगल	16/11/2096	राहु	04/05/2097	गुरु	19/03/2098	शनि	21/01/2099
मंगल	04/06/2096	राहु	05/12/2096	गुरु	17/06/2097	शनि	04/05/2098	बुध	11/03/2099
राहु	02/07/2096	गुरु	22/12/2096	शनि	08/08/2097	बुध	14/06/2098	केतु	31/03/2099
गुरु	26/07/2096	शनि	11/01/2097	बुध	24/09/2097	केतु	01/07/2098	शुक्र	28/05/2099
शनि	24/08/2096	बुध	29/01/2097	केतु	13/10/2097	शुक्र	19/08/2098	सूर्य	14/06/2099
बुध	19/09/2096	केतु	06/02/2097	शुक्र	07/12/2097	सूर्य	03/09/2098	चंद्र	13/07/2099
केतु	30/09/2096	शुक्र	27/02/2097	सूर्य	23/12/2097	चंद्र	27/09/2098	मंगल	03/08/2099
शुक्र	30/10/2096	सूर्य	05/03/2097	चंद्र	19/01/2098	मंगल	14/10/2098	राहु	24/09/2099
सूर्य	08/11/2096	चंद्र	16/03/2097	मंगल	08/02/2098	राहु	27/11/2098	गुरु	09/11/2099

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - शुक्र - राहु	
16/11/2025 22:58	
12/04/2026 01:22	
राहु	08/12/2025 20:56
गुरु	28/12/2025 08:27
शनि	20/01/2026 11:38
बुध	10/02/2026 04:22
केतु	18/02/2026 16:54
शुक्र	15/03/2026 01:18
सूर्य	22/03/2026 08:38
चंद्र	03/04/2026 12:50
मंगल	12/04/2026 01:22

गुरु - शुक्र - गुरु	
12/04/2026 01:22	
19/08/2026 22:10	
गुरु	29/04/2026 08:56
शनि	19/05/2026 22:26
बुध	07/06/2026 07:59
केतु	14/06/2026 21:48
शुक्र	06/07/2026 13:16
सूर्य	13/07/2026 01:06
चंद्र	23/07/2026 20:50
मंगल	31/07/2026 10:39
राहु	19/08/2026 22:10

गुरु - शुक्र - शनि	
19/08/2026 22:10	
21/01/2027 03:22	
शनि	13/09/2026 08:11
बुध	05/10/2026 04:32
केतु	14/10/2026 04:26
शुक्र	08/11/2026 21:18
सूर्य	16/11/2026 14:21
चंद्र	29/11/2026 10:47
मंगल	08/12/2026 10:42
राहु	31/12/2026 13:52
गुरु	21/01/2027 03:22

गुरु - शुक्र - बुध	
21/01/2027 03:22	
08/06/2027 02:58	
बुध	09/02/2027 16:31
केतु	17/02/2027 17:41
शुक्र	12/03/2027 17:37
सूर्य	19/03/2027 15:12
चंद्र	31/03/2027 03:10
मंगल	08/04/2027 04:21
राहु	28/04/2027 21:05
गुरु	17/05/2027 06:38
शनि	08/06/2027 02:58

गुरु - शुक्र - केतु	
08/06/2027 02:58	
03/08/2027 22:34	
केतु	11/06/2027 10:31
शुक्र	20/06/2027 21:47
सूर्य	23/06/2027 17:57
चंद्र	28/06/2027 11:35
मंगल	01/07/2027 19:08
राहु	10/07/2027 07:40
गुरु	17/07/2027 21:29
शनि	26/07/2027 21:23
बुध	03/08/2027 22:34

गुरु - सूर्य - सूर्य	
03/08/2027 22:34	
18/08/2027 13:12	
सूर्य	04/08/2027 16:06
चंद्र	05/08/2027 21:19
मंगल	06/08/2027 17:46
राहु	08/08/2027 22:22
गुरु	10/08/2027 21:07
शनि	13/08/2027 04:38
बुध	15/08/2027 06:19
केतु	16/08/2027 02:46
शुक्र	18/08/2027 13:12

गुरु - सूर्य - चंद्र	
18/08/2027 13:12	
11/09/2027 21:36	
चंद्र	20/08/2027 13:54
मंगल	21/08/2027 24:00
राहु	25/08/2027 15:39
गुरु	28/08/2027 21:35
शनि	01/09/2027 18:06
बुध	05/09/2027 04:54
केतु	06/09/2027 14:59
शुक्र	10/09/2027 16:23
सूर्य	11/09/2027 21:36

गुरु - सूर्य - मंगल	
11/09/2027 21:36	
28/09/2027 22:41	
मंगल	12/09/2027 21:28
राहु	15/09/2027 10:50
गुरु	17/09/2027 17:23
शनि	20/09/2027 10:09
बुध	22/09/2027 20:06
केतु	23/09/2027 19:58
शुक्र	26/09/2027 16:09
सूर्य	27/09/2027 12:36
चंद्र	28/09/2027 22:41

गुरु - सूर्य - राहु	
28/09/2027 22:41	
11/11/2027 18:36	
राहु	05/10/2027 12:29
गुरु	11/10/2027 08:44
शनि	18/10/2027 07:17
बुध	24/10/2027 12:18
केतु	27/10/2027 01:40
शुक्र	03/11/2027 08:59
सूर्य	05/11/2027 13:35
चंद्र	09/11/2027 05:15
मंगल	11/11/2027 18:36

गुरु - सूर्य - गुरु	
11/11/2027 18:36	
20/12/2027 17:39	
गुरु	16/11/2027 23:17
शनि	23/11/2027 03:20
बुध	28/11/2027 15:48
केतु	30/11/2027 22:20
शुक्र	07/12/2027 10:11
सूर्य	09/12/2027 08:56
चंद्र	12/12/2027 14:51
मंगल	14/12/2027 21:24
राहु	20/12/2027 17:39

गुरु - सूर्य - शनि	
20/12/2027 17:39	
05/02/2028 00:00	
शनि	28/12/2027 01:27
बुध	03/01/2028 14:45
केतु	06/01/2028 07:32
शुक्र	14/01/2028 00:35
सूर्य	16/01/2028 08:06
चंद्र	20/01/2028 04:38
मंगल	22/01/2028 21:24
राहु	29/01/2028 19:58
गुरु	05/02/2028 00:00

गुरु - सूर्य - बुध	
05/02/2028 00:00	
17/03/2028 09:29	
बुध	10/02/2028 20:45
केतु	13/02/2028 06:42
शुक्र	20/02/2028 04:17
सूर्य	22/02/2028 05:57
चंद्र	25/02/2028 16:45
मंगल	28/02/2028 02:42
राहु	05/03/2028 07:43
गुरु	10/03/2028 20:11
शनि	17/03/2028 09:29

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - सूर्य - केतु		गुरु - सूर्य - शुक्र		गुरु - चंद्र - चंद्र		गुरु - चंद्र - मंगल	
17/03/2028 09:29		03/04/2028 10:34		22/05/2028 03:22		01/07/2028 17:22	
03/04/2028 10:34		22/05/2028 03:22		01/07/2028 17:22		30/07/2028 03:10	
केतु	18/03/2028 09:21	शुक्र	11/04/2028 13:22	चंद्र	25/05/2028 12:32	मंगल	03/07/2028 09:08
शुक्र	21/03/2028 05:32	सूर्य	13/04/2028 23:48	मंगल	27/05/2028 21:21	राहु	07/07/2028 15:25
सूर्य	22/03/2028 01:59	चंद्र	18/04/2028 01:12	राहु	02/06/2028 23:27	गुरु	11/07/2028 10:19
चंद्र	23/03/2028 12:05	मंगल	20/04/2028 21:23	गुरु	08/06/2028 09:19	शनि	15/07/2028 22:16
मंगल	24/03/2028 11:56	राहु	28/04/2028 04:42	शनि	14/06/2028 19:32	बुध	19/07/2028 22:51
राहु	27/03/2028 01:18	गुरु	04/05/2028 16:33	बुध	20/06/2028 13:31	केतु	21/07/2028 14:38
गुरु	29/03/2028 07:51	शनि	12/05/2028 09:36	केतु	22/06/2028 22:20	शुक्र	26/07/2028 08:16
शनि	01/04/2028 00:37	बुध	19/05/2028 07:11	शुक्र	29/06/2028 16:40	सूर्य	27/07/2028 18:21
बुध	03/04/2028 10:34	केतु	22/05/2028 03:22	सूर्य	01/07/2028 17:22	चंद्र	30/07/2028 03:10

गुरु - चंद्र - राहु		गुरु - चंद्र - गुरु		गुरु - चंद्र - शनि		गुरु - चंद्र - बुध	
30/07/2028 03:10		11/10/2028 04:22		15/12/2028 02:46		02/03/2029 05:22	
11/10/2028 04:22		15/12/2028 02:46		02/03/2029 05:22		10/05/2029 05:10	
राहु	10/08/2028 02:09	गुरु	19/10/2028 20:09	शनि	27/12/2028 07:47	बुध	11/03/2029 23:56
गुरु	19/08/2028 19:54	शनि	30/10/2028 02:54	बुध	07/01/2029 05:57	केतु	16/03/2029 00:32
शनि	31/08/2028 09:30	बुध	08/11/2028 07:40	केतु	11/01/2029 17:54	शुक्र	27/03/2029 12:30
बुध	10/09/2028 17:52	केतु	12/11/2028 02:35	शुक्र	24/01/2029 14:20	सूर्य	30/03/2029 23:17
केतु	15/09/2028 00:08	शुक्र	22/11/2028 22:19	सूर्य	28/01/2029 10:52	चंद्र	05/04/2029 17:16
शुक्र	27/09/2028 04:20	सूर्य	26/11/2028 04:14	चंद्र	03/02/2029 21:05	मंगल	09/04/2029 17:51
सूर्य	30/09/2028 20:00	चंद्र	01/12/2028 14:06	मंगल	08/02/2029 09:02	राहु	20/04/2029 02:14
चंद्र	06/10/2028 22:06	मंगल	05/12/2028 09:00	राहु	19/02/2029 22:37	गुरु	29/04/2029 07:00
मंगल	11/10/2028 04:22	राहु	15/12/2028 02:46	गुरु	02/03/2029 05:22	शनि	10/05/2029 05:10

गुरु - चंद्र - केतु		गुरु - चंद्र - शुक्र		गुरु - चंद्र - सूर्य		गुरु - मंगल - मंगल	
10/05/2029 05:10		07/06/2029 14:58		27/08/2029 18:58		21/09/2029 03:22	
07/06/2029 14:58		27/08/2029 18:58		21/09/2029 03:22		11/10/2029 00:38	
केतु	11/05/2029 20:56	शुक्र	21/06/2029 03:38	सूर्य	29/08/2029 00:11	मंगल	22/09/2029 07:12
शुक्र	16/05/2029 14:34	सूर्य	25/06/2029 05:02	चंद्र	31/08/2029 00:53	राहु	25/09/2029 06:48
सूर्य	18/05/2029 00:40	चंद्र	01/07/2029 23:22	मंगल	01/09/2029 10:59	गुरु	27/09/2029 22:26
चंद्र	20/05/2029 09:29	मंगल	06/07/2029 17:00	राहु	05/09/2029 02:38	शनि	01/10/2029 02:00
मंगल	22/05/2029 01:15	राहु	18/07/2029 21:12	गुरु	08/09/2029 08:33	बुध	03/10/2029 21:37
राहु	26/05/2029 07:31	गुरु	29/07/2029 16:56	शनि	12/09/2029 05:05	केतु	05/10/2029 01:27
गुरु	30/05/2029 02:26	शनि	11/08/2029 13:22	बुध	15/09/2029 15:53	शुक्र	08/10/2029 09:00
शनि	03/06/2029 14:23	बुध	23/08/2029 01:20	केतु	17/09/2029 01:58	सूर्य	09/10/2029 08:51
बुध	07/06/2029 14:58	केतु	27/08/2029 18:58	शुक्र	21/09/2029 03:22	चंद्र	11/10/2029 00:38

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : संकटा 4 वर्ष 10 मास 23 दिन

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
07/12/1985		31/10/1990		31/10/1991		30/10/1993		30/10/1996	
31/10/1990		31/10/1991		30/10/1993		30/10/1996		30/10/2000	
	00/00/0000	मंग	10/11/1990	पिंग	11/12/1991	धांय	30/01/1994	भ्राम	11/04/1997
	00/00/0000	पिंग	30/11/1990	धांय	09/02/1992	भ्राम	31/05/1994	भद्रि	30/10/1997
	07/12/1985	धांय	31/12/1990	भ्राम	01/05/1992	भद्रि	31/10/1994	उल्क	01/07/1998
धांय	10/12/1985	भ्राम	09/02/1991	भद्रि	10/08/1992	उल्क	01/05/1995	सिद्ध	11/04/1999
भ्राम	31/10/1986	भद्रि	01/04/1991	उल्क	10/12/1992	सिद्ध	30/11/1995	संक	01/03/2000
भद्रि	11/12/1987	उल्क	01/06/1991	सिद्ध	01/05/1993	संक	31/07/1996	मंग	10/04/2000
उल्क	11/04/1989	सिद्ध	11/08/1991	संक	10/10/1993	मंग	30/08/1996	पिंग	30/06/2000
सिद्ध	31/10/1990	संक	31/10/1991	मंग	30/10/1993	पिंग	30/10/1996	धांय	30/10/2000

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
30/10/2000		30/10/2005		31/10/2011		31/10/2018		31/10/2026	
30/10/2005		31/10/2011		31/10/2018		31/10/2026		31/10/2027	
भद्रि	11/07/2001	उल्क	31/10/2006	सिद्ध	11/03/2013	संक	10/08/2020	मंग	10/11/2026
उल्क	11/05/2002	सिद्ध	31/12/2007	संक	30/09/2014	मंग	30/10/2020	पिंग	30/11/2026
सिद्ध	01/05/2003	संक	01/05/2009	मंग	10/12/2014	पिंग	11/04/2021	धांय	31/12/2026
संक	10/06/2004	मंग	01/07/2009	पिंग	01/05/2015	धांय	10/12/2021	भ्राम	09/02/2027
मंग	31/07/2004	पिंग	30/10/2009	धांय	30/11/2015	भ्राम	31/10/2022	भद्रि	01/04/2027
पिंग	09/11/2004	धांय	01/05/2010	भ्राम	09/09/2016	भद्रि	11/12/2023	उल्क	01/06/2027
धांय	11/04/2005	भ्राम	31/12/2010	भद्रि	31/08/2017	उल्क	11/04/2025	सिद्ध	11/08/2027
भ्राम	30/10/2005	भद्रि	31/10/2011	उल्क	31/10/2018	सिद्ध	31/10/2026	संक	31/10/2027

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
31/10/2027		30/10/2029		30/10/2032		30/10/2036		30/10/2041	
30/10/2029		30/10/2032		30/10/2036		30/10/2041		31/10/2047	
पिंग	11/12/2027	धांय	30/01/2030	भ्राम	11/04/2033	भद्रि	11/07/2037	उल्क	31/10/2042
धांय	09/02/2028	भ्राम	31/05/2030	भद्रि	30/10/2033	उल्क	11/05/2038	सिद्ध	31/12/2043
भ्राम	01/05/2028	भद्रि	31/10/2030	उल्क	01/07/2034	सिद्ध	01/05/2039	संक	01/05/2045
भद्रि	10/08/2028	उल्क	01/05/2031	सिद्ध	11/04/2035	संक	10/06/2040	मंग	01/07/2045
उल्क	10/12/2028	सिद्ध	30/11/2031	संक	01/03/2036	मंग	31/07/2040	पिंग	30/10/2045
सिद्ध	01/05/2029	संक	31/07/2032	मंग	10/04/2036	पिंग	09/11/2040	धांय	01/05/2046
संक	10/10/2029	मंग	30/08/2032	पिंग	30/06/2036	धांय	11/04/2041	भ्राम	31/12/2046
मंग	30/10/2029	पिंग	30/10/2032	धांय	30/10/2036	भ्राम	30/10/2041	भद्रि	31/10/2047

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
31/10/2047		31/10/2054		31/10/2062		31/10/2063		30/10/2065	
31/10/2054		31/10/2062		31/10/2063		30/10/2065		30/10/2068	
सिद्ध	11/03/2049	संक	10/08/2056	मंग	10/11/2062	पिंग	11/12/2063	धांय	30/01/2066
संक	30/09/2050	मंग	30/10/2056	पिंग	30/11/2062	धांय	09/02/2064	भ्राम	31/05/2066
मंग	10/12/2050	पिंग	11/04/2057	धांय	31/12/2062	भ्राम	01/05/2064	भद्रि	31/10/2066
पिंग	01/05/2051	धांय	10/12/2057	भ्राम	09/02/2063	भद्रि	10/08/2064	उल्क	01/05/2067
धांय	30/11/2051	भ्राम	31/10/2058	भद्रि	01/04/2063	उल्क	10/12/2064	सिद्ध	30/11/2067
भ्राम	09/09/2052	भद्रि	11/12/2059	उल्क	01/06/2063	सिद्ध	01/05/2065	संक	31/07/2068
भद्रि	31/08/2053	उल्क	11/04/2061	सिद्ध	11/08/2063	संक	10/10/2065	मंग	30/08/2068
उल्क	31/10/2054	सिद्ध	31/10/2062	संक	31/10/2063	मंग	30/10/2065	पिंग	30/10/2068

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
30/10/2068		30/10/2072		30/10/2077		31/10/2083		31/10/2090	
30/10/2072		30/10/2077		31/10/2083		31/10/2090		00/00/0000	
भ्राम	11/04/2069	भद्रि	11/07/2073	उल्क	31/10/2078	सिद्ध	11/03/2085	संक	10/08/2092
भद्रि	30/10/2069	उल्क	11/05/2074	सिद्ध	31/12/2079	संक	30/09/2086	मंग	30/10/2092
उल्क	01/07/2070	सिद्ध	01/05/2075	संक	01/05/2081	मंग	10/12/2086	पिंग	11/04/2093
सिद्ध	11/04/2071	संक	10/06/2076	मंग	01/07/2081	पिंग	01/05/2087	धांय	07/12/2093
संक	01/03/2072	मंग	31/07/2076	पिंग	30/10/2081	धांय	30/11/2087		00/00/0000
मंग	10/04/2072	पिंग	09/11/2076	धांय	01/05/2082	भ्राम	09/09/2088		00/00/0000
पिंग	30/06/2072	धांय	11/04/2077	भ्राम	31/12/2082	भद्रि	31/08/2089		00/00/0000
धांय	30/10/2072	भ्राम	30/10/2077	भद्रि	31/10/2083	उल्क	31/10/2090		00/00/0000

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	6
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	80%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	75%	पराक्रम, धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	75%	स्वास्थ्य, पराक्रम, सुख
मोती	चंद्र	73%	धनार्जन, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	58%	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	56%	कम खर्च, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	34%	रोग, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	28%	रोग, दाम्पत्य कष्ट, व्यय
गोमेद	राहु	0%	शत्रु व रोग, व्यय

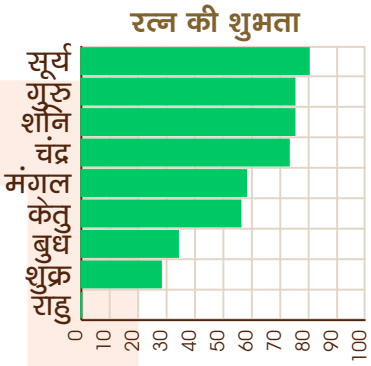

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	21/01/1992	86%	86%	58%	47%	75%	28%	75%	0%	38%
मंगल	21/01/1999	86%	80%	70%	9%	81%	28%	75%	0%	62%
राहु	20/01/2017	67%	61%	41%	34%	75%	41%	81%	22%	38%
गुरु	20/01/2033	86%	80%	64%	9%	88%	3%	75%	0%	56%
शनि	21/01/2052	67%	61%	41%	47%	75%	41%	88%	9%	38%
बुध	20/01/2069	86%	61%	58%	55%	75%	41%	75%	0%	56%
केतु	21/01/2076	67%	61%	64%	34%	75%	41%	62%	0%	69%
शुक्र	21/01/2096	67%	61%	58%	47%	75%	52%	81%	9%	62%
सूर्य	21/01/2102	92%	80%	64%	34%	81%	3%	62%	0%	38%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए माणिक्य, पुखराज व नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

माणिक्य, पुखराज व नीलम रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मोती, मूंगा एवं लहसुनिया रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पन्ना व हीरा रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

गोमेद पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य प्रथम भाव में स्थित हैं। अतः आपको शुक्र रत्न माणिक्य

धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न धारण करने से आपको उत्तम मित्र व उच्च पद की प्राप्ति होगी। सरकार से आपके अच्छ संबंध होंगे। सत्ता से जुड़े लोगों से आपके संबंध करीबी और मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न आत्मविश्वास भाव में वृद्धि करेगा। तथा इसके प्रभाव से आपकी व्यक्तित्व में भी तेज आयेगा। आपके व्यक्तित्व का विकास होगा। आपका चहुंमुखी विकास होगा। धन-धान्य बढ़ेगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में सूर्य दशमेश है। आजीविका क्षेत्र को प्रबल करने के लिए आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते है। माणिक्य रत्न आपको उत्तम स्वास्थ्य सुख दे सकता है। रत्न शुभता से कार्यक्षेत्र में आपको उच्च सम्मानित पद, आधिकारिक शक्तियां, प्रशासनिक कुशलता की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न आपको व्यवसाय में सफलता भी देगा। माणिक्य रत्न की शुभता से आपके अपने पिता से संबंध मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न के प्रभाव से आप किसी सरकारी क्षेत्र में कायर्रत हो सकते है। सरकारी विभागों से जुड़े कार्य रत्न शुभता से शीघ्र पूरे हो सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु तीसरे भाव में स्थित है। आप गुरु रत्न पुखराज धारण करें। पुखराज रत्न आपको अपने बड़े भाईयों से स्नेह दिलायेगा। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोग करेगा। पुखराज रत्न की शुभता आपको स्वतन्त्र व्यापार की ओर अग्रसर कर सकती है। भाग्य और आय क्षेत्र में सफलता प्राप्ति होती है। पुखराज रत्न आपको सहोदर भ्राताओं का सुख प्राप्त करायेगा। धन, सुख-सौभाग्य के लिए भी पुखराज रत्न शुभदायक रत्न है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में गुरु द्वितीयेश और पंचमेश है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज शुभ फलदायक रत्न है। पुखराज रत्न धारण से संतान सुख प्राप्त हो सकते है। इसकी शुभता से आप धनी और सम्मानित व्यक्ति बन सकते है। पुखराज रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में संतोषप्रद लाभ दे सकता है। रत्न प्रभाव से आप भाग्यशाली, धर्मपरायण और प्रसन्न रहने वाले व्यक्तित्व के स्वामी बन सकते है। पुखराज रत्न आपको महत्वाकांक्षी, उदार,

आत्मविश्वासी और व्यावहारिक बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि लग्न भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। शनि रत्न नीलम आपकी परिश्रम क्षमता एवं कार्यकुशलता में वृद्धि करेगा। सरकारी पक्ष व पिता से सहयोग प्राप्त होगा। प्रथम भाव में स्थित शनि की दृष्टि तृतीय, सप्तम एवं दशम भाव पर आ रही है। शनि रत्न नीलम की शुभता से भाग्योदय, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होगी। जीवन साथी से सहयोग प्राप्त होगा। भाई-बंधुओं से सुख-स्नेह प्राप्ति में भी यह रत्न सहयोग करेगा। नीलम रत्न आपके पुरुषार्थ भाव में वृद्धि कर रहे है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश है। शनि शुभता प्राप्त करने के लिए आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते है। नीलम रत्न आपको दूरदर्शिता, पुरुषार्थ एवं छोटे भाई बहनों का सुख प्राप्त हो सकता है। यह रत्न आपको मातृ सुख दे सकता है। रत्न शुभता से आप भूमि व संपति से पर्याप्त लाभ प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपके शत्रुओं को परास्त कर सकता है। पिता से आपके संबंध सुधारने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न आपको यात्राओं के भरपूर अवसर प्रदान कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र एकादश भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न की शुभता से आपको विदेश जाना पसंद होगा। आपको महंगे वाहनों का सुख प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपत्ति होगी। रत्न शुभता से समाज में आपकी मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। मोती रत्न के प्रभाव से आपको सरकारी मामलों की विधिवत जानकारी होगी। मोती रत्न आपको सरकार की ओर से सम्मान और पद प्रतिष्ठा दे सकता है। रत्न शुभता से आप मिलनसार बनेंगे। व्यापार के माध्यम से आपको मनोकूल लाभ होगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में चंद्र नवमेश है। अपने भाग्य को बली करने के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते है। मोती रत्न धारण करने से आपके रुके हुए कार्य पूर्ण होने लगेंगे। किसी कारणवश आपकी जो योजनाएं रुकी हुई है वो फिर से शुरु हो सकती है। रत्न शुभता से आपका ग्रहस्थ जीवन सुखमय होगा। रत्न प्रभाव से आपको व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त हो सकती है। मोती रत्न धारण कर आप की धार्मिक आस्था प्रबल होगी। जिसके फलस्वरूप आपके पूर्वजन्मों के दोषों का निराकरण हो सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल बारहवें भाव में स्थित है। आपके लिए मंगल रत्न मूंगा धारण करना शुभ फलदायक रहेगा। मूंगा रत्न धारण कर आप को प्रतियोगिताओं में विजयी बनाएगा। रत्न शुभता से आपके विरोधी आपको परेशान नहीं पर पाएंगे। मूंगा रत्न आपको हिंसात्मक विचारों से दूर रखेगा। यह रत्न आपके छोटे भाई या बहन को बड़ा पद और प्रतिष्ठा दिला सकता है। मूंगा रत्न आर्थिक स्थिति को स्थिरता प्रदान करेगा। रत्न प्रभाव से आप व्यर्थ के व्ययों पर नियंत्रण बनाए रखेंगे। मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करने के लिए आप मंगल रत्न मूंगा धारण करें।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और षष्ठेश है। मंगल रत्न मूंगा

धारण कर आपका रोगों से बचाव हो सकता है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप अपने व्यक्तित्व को बेहतर कर सकते है। यह रत्न आपके क्रोध भाव में कमी कर आपको विनम्र बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। मूंगे रत्न की शुभता से आपकी ऊर्जा शक्ति, जोश, उत्साह, साहस तथा पहल क्षमता का विकास हो सकता है। मूंगा रत्न आपके लिए षष्ठेश का रत्न भी होने के कारण आपको रोग, ऋण और कोर्ट कचहरी के मामलों में मनोकूल सफलता दे सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु द्वादश भाव में स्थित है। आप केतु ग्रह का लहसुनिया रत्न धारण करें। लहसुनिया रत्न शुभ रत्न होकर आपको राजा के समान सुख और ऐश्वर्य देगा। शैक्षिक पक्ष से भी आप सफल होंगे। यह रत्न शत्रुओं को पराजित करने में आपको सहयोग कर सकता है। लहसुनिया रत्न प्रभाव से आप वादि-विवाद में विजय प्राप्त करेंगे। आपके व्यय धार्मिक और शुभ कार्यो पर होंगे। लहसुनिया रत्न शुभता आपको मानसिक शांति प्राप्त करने में सहयोग देगी। आप मोक्ष प्राप्ति की ओर प्रयासरत रह सकते है। इसके अलावा केतु रत्न आपको जीवनकाल में बहुत सी यात्राएं देगा।

केतु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र प्रथम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं

का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध लग्न भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने से आपकी बौद्धिक विषयों में रुचि कम हो सकती है। आपका स्वभाव अव्यवहारिक हो सकता है। सभा में अपने विचार रखने में आप संकोच का अनुभव कर सकते है। इस रत्न के प्रभाव से आपका व्यक्तित्व और आयु दोनों प्रभावित हो सकती है। बुद्धि और व्यवसायिक योग्यता की कमी का अनुभव आपको हो सकता है। पन्ना रत्न धारण करने से आपको स्नायु तंत्र और त्वचा से संबंधित रोग भी हो सकते है। अपने जीवन साथी से आपके वादि-विवाद हो सकते है। जिसके कारण आपके दांपत्य जीवन की शांति भंग हो सकती है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में बुध एकादशेश और अष्टमेश है। आपकी कुंडली में बुध का अष्टमेश होना शुभफलदायी नहीं है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपकी विचारधारा नकारात्मक हो सकती है। रत्न धारण करने पर आप धन संचय कला में निपुण होने पर भी अपनी आदतों और शौक के कारण आर्थिक कठिनाईयों में पड़ सकते है। यह रत्न आपको आय और लाभ क्षेत्रों में प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है। पन्ना रत्न आपकी बौद्धिक योग्यता में कमी कर सकता है। इस रत्न को पहनने पर आपकी इच्छापूर्ति में कमी हो सकती है। आपको शुभचिन्तकों का अभाव हो सकता है। यह रत्न आपकी संभावित प्राप्तियों को अवरुद्ध कर सकता है। सभी प्रकार के लाभों की प्राप्तियों में भी यह रत्न विलम्ब कर सकता है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र लग्न भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करने से आपको एक साथ एक से अधिक कार्य करने में परेशानी, कार्यो में चातुर्य की कमी, विद्वता भाव का अभाव और पारिवारिक सुख-समृद्धि की कमी हो सकती है। यह रत्न आपको प्रेम, आकर्षण एवं विपरीत लिंग विषयों में असफलता दे सकता है। धन संचय करना आपके लिए कठिन होगा। इसके अतिरिक्त स्वतंत्र व्यापार के लिए भी इस रत्न की प्रतिकूलता बनी हुई है। हीरा रत्न आपके आकर्षण भाव में कमी, अधिक वाचालता, शुष्क स्वभाव एवं अत्यधिक विलासी स्वभाव दे सकता है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में शुक्र सप्तमेश और द्वादशेश है। शुक्र ग्रह को शुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त नहीं है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए प्रतिकूल फलदायक हो सकता है। यह रत्न आपको मानसिक रूप से परेशान कर सकता है। हीरा रत्न

आपको कामी और विलासी बना सकता है। आपके अधिकतर व्यय वैवाहिक जीवन पर मुख्यतः केन्द्रित हो सकते है। इस रत्न को धारण करने पर आपका अपने जीवन साथी से मतभेद हो सकता है। रत्न की अनुकूलता आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य में भी कमी कर सकती है। यह रत्न आपको साझेदारी व्यवसायों में हानि दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको शुक्र जनित व्यवसायों में हानि हो सकती है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद आपको कुसंगति का शिकार कर सकता है। प्रतियोगिताओ में सफल होने के लिए आप कुमार्ग का प्रयोग कर सकते है। विपरीत धर्म के लोगों से आपकी मित्रता संबंध बढ़ सकते है। यह मित्रता आपको लाभ भी दे सकती है। रोग और आयु पक्ष के लिए गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल नहीं रहेगा। साहस की कमी आपको बड़े बड़े कामों को अंजाम देने से रोक सकती है। गोमेद रत्न प्रभाव से आपको रोग, ऋण और शत्रुओं पर विजय पाने के लिए विशेष चातुर्य का प्रयोग करना होगा। ऊपरी बाधाओं या कोई रहस्यमयी बीमारियों के प्रभाव में आप आ सकते है। गोमेद रत्न धारण से आपको मामा, मौसी या चाचा पक्ष से सुख कम प्राप्त होगा।

राहु मेष राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

दशानुसार रत्न विचार

गुरु
(20/01/2017 - 20/01/2033)

गुरु की दशा में आपका पुखराज, माणिक्य, मोती व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(20/01/2033 - 21/01/2052)

शनि की दशा में आपका नीलम व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना, मूंगा, हीरा व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(21/01/2052 - 20/01/2069)

बुध की दशा में आपका माणिक्य, पुखराज व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, मूंगा, लहसुनिया व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न नेष्ट हैं और गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(20/01/2069 - 21/01/2076)

केतु की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, माणिक्य, मूंगा, नीलम व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा व पन्ना रत्न नेष्ट हैं और गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(21/01/2076 - 21/01/2096)

शुक्र की दशा में आपका नीलम व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, लहसुनिया, मोती, मूंगा व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(21/01/2096 - 21/01/2102)

सूर्य की दशा में आपका माणिक्य, पुखराज व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व पन्ना रत्न नेष्ट हैं और हीरा व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - मून स्टोन

आपका जन्म वृश्चिक राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह मंगल होता है। मून स्टोन रत्न चंद्रमा ग्रह के लिये धारण किया जाता है और चंद्रमा वृश्चिक राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि चंद्रमा की कर्क राशि वृश्चिक लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी जातक द्वारा किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृश्चिक राशि के लग्न वाले जातकों को मून स्टोन रत्न धारण करके चंद्रमा को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। चंद्र ग्रह के लिये मून स्टोन रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी चंद्र मंत्री पद व जनता का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा अपने वरिष्ठ व उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को माता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। चंद्रमा ग्रह मन एवं माता का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको मानसिक रोग या ठंड से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा डिप्रेशन की स्थिति में डिप्रेशन से मुक्ति दिलाता है।

मून स्टोन को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है तथा चंद्र ग्रह बुध को अपना मित्र ग्रह मानता है। मून स्टोन चंद्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात सोमवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल चंद्र की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। सोमवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय चंद्र की होरा का होता है। मून स्टोन को यदि सोमवार के साथ-साथ चंद्र के नक्षत्र अर्थात् रोहिणी, हस्त और श्रवण में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है। मून स्टोन को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, चंद्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

चंद्र का मंत्र - ऊँ सों सोमाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि चंद्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चीनी, दही,

सवा मीटर सफेद कपड़े का दान करें तो मून स्टोन की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन चंद्र का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या शिवलिंग पर जल चढ़ायें और शिव आराधना करें तो यह मून स्टोन की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक सोमवार को शिव चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृश्चिक लग्न वाले जातक यदि मून स्टोन की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली वृश्चिक लग्न की हैं। वृश्चिक लग्न के प्रभाव से आपके व्यक्तित्व पर मंगल का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। स्वभाव में उग्रता होने के कारण आप नेतृत्व शक्ति अच्छी है, परन्तु स्थिर राशि लग्न में होने के कारण आपके जीवन में स्थिरता रहती हैं। आप हर कार्य को टिक कर करते हैं। जल तत्व होने के कारण जिस तरह जल कभी बहुत शान्त और कभी उसमें उग्रता आने पर सब-कुछ तहस-नहस कर देता है वहीं बातें आपमें भी पायी जाती हैं। इसलिए आपको अपने क्रोध पर नियंत्रण बनाये रखना चाहिए क्योंकि ऐसे में अक्सर आप अपना ही नुकसान कर बैठते हैं।

आप बहुत जल्दी घुल-मिल जाते हैं और सभी के बीच में अपनी जगह बना लेते हैं।

आपकी याददाश्त बहुत अच्छी है और कुछ भी भूलते नहीं है। व आपकी सहन शक्ति बहुत है। आपके स्वभाव में क्रोध रहता है परन्तु दिल के नरम हैं। आपको अनुशासनहीनता पसंद नहीं है। उदारता का गुण आपमें है। आप चंचल मस्तिष्क वाले तथा अधिक भावुक प्रकृति के हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। तथा कुंडली के विशेष अशुभ भावों की श्रेणी में आते हैं। छठा स्थान दुस्थान है। व उपचय भाव हैं। छठे भाव का स्वामी और छठे भाव में बैठे ग्रह दोनों बुरा फल देते हैं। षष्ठ भाव से शत्रु, रोग, चिंता, ऋण और विमाता का विचार किया जाता हैं। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है।

अष्टम भाव में स्थित होने वाले ग्रहों का अपना और अपने स्वामित्व वाले भावों के बलों का नाश हो जाता हैं। तथा इस भाव का स्वामी अष्टमेश जिस भाव में बैठता हैं। उस भाव के फलों का नाश करता हैं। व जिस भाव का स्वामी अपने स्थान से अष्टम स्थान में स्थित होता हैं। उस भाव के फलों की हानि होती हैं। कुंडली का द्वादश भाव व्यय का पर्याय हैं। यह भाव हानियां, टैक्स, निद्रा, शैया भोग, शत्रु, अवनति, विदेश यात्रा का भाव हैं।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृश्चिक लग्न में षष्ठ भाव के स्वामी मंगल है। लग्नेश व षष्ठेश मंगल आपके शरीर में शक्ति व आत्मबल की अल्प वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, भाग्य व कर्म के मार्ग में रुकावटें, प्रतिष्ठा में न्यूनता, व्यय अधिक, विदेश स्थानों से लाभ दे सकता हैं।

बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रह विछोह का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रहविछोह का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट, परेशानियों के साथ लाभ प्राप्ति दे सकता है।

आपके लग्न के लिए शुक्र सप्तमेश व द्वादशेश हैं। द्वादश में शुक्र की राशी तुला होने से आप धार्मिक, धर्म के प्रति निष्ठा, बचपन कष्टमय, स्वजनों तथा मित्रों से लाभ, व्यय अनियंत्रित, शान-शौकत का प्रदर्शन, क्षीण नेत्र ज्योति, नौकरी में अधिक लाभ प्राप्त दे सकता हैं।

आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में राहु तथा द्वादश भाव में केतु की स्थिति से आपका जीवन संघर्षमय हो सकता हैं। मगर इन संघषों में आपको विजय प्राप्त होगी। पराक्रम से शत्रुओं पर प्रभुत्व बना रहेगा। यह योग आप में मानसिक तनाव व दबाव सहने की क्षमता में वृद्धि कर रहा हैं।

मंगल द्वादश भाव में है। पुरुषार्थ से किये गए सभी कार्य आपके सफल हो सकते है। आपका स्वभाव कठोर, शंकालु, असत्यभाषी, अल्प धर्मपरायण, शत्रुहन्ता, मामा को कष्ट, बाहर के लोगों द्वारा धन-नाश, वात- पित रोगी, और संतान जन्य चिंता दे सकता है ।

केतु की स्थिति द्वादश भाव में शुभ नहीं मानी गयी है, इसके परिणाम से आप खचीले, चिंतित, प्रवासी, सनकी, चंचल बुद्धि, आपके अधिक व्यय धार्मिक कार्यों में होते है, आप इन्द्रियों पर विजय प्राप्ति का प्रयास कर सकते है। आपको जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए जीवन भर संघर्ष करना पड़ सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 6, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-20/03/1990	20/06/1990-14/12/1990	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-06/06/2000	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-09/09/2009	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-12/07/2039	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	धन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	धनार्जन
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	कम खर्च

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति लग्न से द्वादश भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। क्योंकि आपकी कुंडली में यह दोष किसी भी प्रकार से भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आपका व्यय होता रहेगा जिससे यदा कदा अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन यह स्थिति अल्पकालिक रहेगी। सामान्यतया आप आर्थिक रूप से सम्पन्न ही रहेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य आपका अच्छा रहेगा। यदा कदा मानसिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी आएंगे परन्तु आप उनका सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी जिससे परस्पर संबंधों में मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में भी आपको किंचित व्यवधानों के साथ न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होती रहेगी।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में भी किंचित विलम्ब हो सकता है लेकिन इस कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। साथ ही विवाह पूर्व की किसी वार्ता में गतिरोध भी हो सकता है लेकिन विवाह के बाद आपके परस्पर संबंध समान रूप से अनुकूल रहेंगे तथा दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में आप समर्थ होंगे।

जन्म कुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी परन्तु धनार्जन भी आवश्यक मात्रा में होता रहेगा जिससे इसका दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों का सामना तथा समाधान करने में भी आप समर्थ रहेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आत्मबल से आप युक्त रहेंगे जिससे कार्य क्षेत्र में आप

उन्नतिशील रहेंगे। षष्ठ भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। यदा कदा पित या गर्मी से आपको शारीरिक परेशानी की अल्प मात्रा में अनुभूति हो सकती है सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा साथ ही स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन आपसी सामंजस्य के द्वारा दाम्पत्य जीवन की मधुरता बनाए रखने में आप समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष खत्म हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे ।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक यात्रा बहुत करता है पर आंशिक रूप में ही सफलता मिलती है। कभी रोग व्याधि जातक के शरीर में लग जाती है, जिसमें थोड़ा अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जातक का जीवन मानसिक रूप से थोड़ा बहुत परेशान रहता है एवं शोक दुःख आदि भी घेर लेता है। जातक को प्रेम प्रसंग में विशेष रूप से सफलता नहीं मिलती है। मनोभिलाषित पत्नी प्रायः नहीं मिलती। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का चरित्र थोड़ा सन्देहास्पद रहता है। जातक के मन में आंशिक रूप से निराशा की भावना जागृत हो उठती है और अपने मन में दूसरों के प्रति शत्रुता पालकर रखने वाला होता है। धर्म की आंशिक क्षति होती है। जातक कभी-कभी बुरा स्वप्न भी देखता है। आत्मबल कमजोर रहता है। जातक राजदण्ड का कभी भागीदार बन जाता है। जातक का जीवन शत्रुओं के षड्यन्त्र से घिरा रहता है और उस षड्यन्त्र में आंशिक रूप से शत्रुओं की विजय होती है। इस योग से प्रभावित व्यक्ति को थलसेना में नहीं जाना विशेष रूप से हितकर है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक एक अच्छा दलील देने वाला एवं वकालत करने वाला तथा राजनीति के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।

12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो

आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक सात होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक सात होता है। अंक सात का अधिष्ठाता भारतीय मतानुसार केतु एवं पाश्चात्य मतानुसार नेपच्यून ग्रह को माना गया है। इन ग्रहों के थोड़े-बहुत प्रभाव आपके ऊपर आयेंगे। मूलांक सात के प्रभावश आपके अन्दर कल्पना शक्ति की मात्रा अधिक रहेगी। काव्य रचना, गीत-संगीत सुनना, दूरदर्शन देखना आपकी अभिरुचि में समाहित रहेगा। ललित कलाओं, लेखन, साहित्य आदि में आपकी रुचि रहेगी। आर्थिक सफलताएं आपको अधिक नहीं मिलेंगी तथा धन संग्रह करना भी आपको मुश्किल लगेगा। यात्रा, पर्यटन, सैर-सपाटा इत्यादि आपको विशेष अच्छा लगेगा।

दूसरों के मन की बात समझने में आप निपुणता हासिल करेंगे एवं सामने वाले को अपनी ओर आकृष्ट करने की विशेष शक्ति भी आपके अन्दर रहेगी। धर्म के क्षेत्र में आप परिवर्तनशील विचारधारा के रहेंगे एवं पुरानी रूढ़ियों, रीतियों में अधिक रुचि नहीं लेंगे। आपको ऐसे रोजगार-व्यापार पसन्द आयेंगे, जिनमें यात्रायें होती रहती हों तथा दूर-दूर के देशों से सम्पर्क बना रहे। आप ऐसा ही रोजगार चुनेंगे, जिनमें यात्रा के अवसर मिलते रहें।

अतीन्द्रिय ज्ञान की अधिकतावश जहाँ आप दूसरों के मन की बात को जान जायेंगे वहीं आपको स्वप्न भी अद्भुत प्रकार के आते रहेंगे। आपको विदेशों से, जहाज, मोटर इत्यादि वाहनों से विशेष लाभ प्राप्त होंगे।

भाग्यांक 6 के स्वामी शुक्र ग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय चौंसठ कलाओ के अन्दर ही होगा। शुक्र कला का दाता है। अतः आपके अन्दर ललित कलाओं में से कुछ कलाओं का समावेश होगा। आप कला के क्षेत्र में, कला के द्वारा जीवन यापन करेंगे। कलात्मक वस्तुएं आपको लाभ प्रदान करेंगी। आप विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण के अवगुण वश तन-मन एवं धन का व्यय करेंगे। सौन्दर्य की ओर आकर्षण आपकी कमजोरी रहेगा।

आपके कार्य करने के स्थान तथा रहने के स्थान की साज-सजावट बनाये रखने में आपको हमेशा धन व्यय करते रहना होगा। क्योंकि सुसज्जित परिवेश में रहना आपके मनोनुकूल है। आप वस्त्र आभूषण के शौकीन रहेंगे। धन स्थिति आपकी ठीक रहेगी। शान-शौकत बनी रहेगी। सामने वाले व्यक्ति आपको हमेशा धनी समझते रहेंगे, भले ही आप यदा-कदा कड़की के दिनों में चल रहे हों। किसी भी कला के क्षेत्र को आप अपना रोजगार का क्षेत्र चुनते हैं, तो आपकी उन्नति निश्चित ही होगी।

आपका मूलांक 7 है तथा आपका भाग्यांक 6 है। मूलांक 7 का स्वामी नेपच्यून है तथा भाग्यांक 6 का स्वामी शुक्र है। मूलांक 7 और भाग्यांक 6 के बीच मित्र संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक एवं भाग्यांक दोनों के मिलेजुले फल प्राप्त होंगे। नेपच्यून एवं शुक्र के प्रभाववश आपकी उच्चता कला के किसी क्षेत्र में होगी। चौंसठ कलाओं में से किसी एकाधिक कला में आपको अच्छी सफलताऐं प्राप्त होंगी अथवा आपकी रुचि किसी न किसी कला में हमेशा बनी रहेगी। आप कलात्मक वस्तुओं एवं दर्शनीय स्थलों के भ्रमण में काफी रुचि लेंगे।

आप इस प्रकार का रोजगार-व्यापार पसंद करेंगे, जिसमें कला के किसी न किसी क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान रहे। रोजगार-व्यापार की वृद्धि हेतु आपकी यात्राएं होती रहेंगी। आपकी कुछ यात्राएं दूर-दूर के देशों में होंगी तथा उनसे आपको अच्छे लाभ की प्राप्ति होगी। धन संग्रह के क्षेत्र में आपको कुछ कठिनाईयां आएंगी, जबकि भौतिक सुख-सुविधाओं की वस्तुएं आप आसानी से प्राप्त कर लेंगे। आपका उच्च भाग्योदय मध्य जीवन से होगा तथा अंतिम अवस्था तक आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत बन जाएगी। प्रारंभिक जीवन की अपेक्षा अंतिम अवस्था में आपका सामाजिक प्रभाव अच्छे स्तर का रहेगा।

आपका भाग्योदय 24 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 33 वर्ष की अवस्था से आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी एवं 42 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूल्यांक 7 की 2 एवं 6 से मित्रता है तथा भाग्यांक 6 की 3 एवं 9 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 2, 3, 6, 7, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन की कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक की आपके भाग्यांक से मित्रता होने से मूलांक-भाग्यांक के फल आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, या उपर्युक्त वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभवार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, मार्च, जून, जुलाई, सितंबर माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास, वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें। मूलांक 7 एवं भाग्यांक 8 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

ग्रह फल

सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्ययोगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक

दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्मी, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, क्रोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ठग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ठगने वाला होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यतया वृश्चिक लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं आकर्षक होते हैं तथा परिश्रम एवं लगन के द्वारा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। स्वभाव से ये निर्भीक होते हैं तथा कई विषयों के ज्ञानार्जन में इनकी रूचि रहती है तथा समाज में विद्वान के रूप में अपनी पहचान बनाते हैं। कुल या परिवार में ये श्रेष्ठ रहते हैं तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग के मध्य आदरणीय रहते हैं। आत्मशक्ति की इनमें प्रबलता रहती है तथा अत्यधिक महत्वाकांक्षी भी होते हैं। धन संग्रह के प्रति इनकी रूचि रहती है तथा धनार्जन में नैतिक मूल्यों का पालन अल्प मात्रा में ही करते हैं। भावुकता की भी इनमें न्यूनता रहती है तथा अपने समस्त कार्यों को के द्वारा सम्पन्न करते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान या गणित के क्षेत्र में ये सफलता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने में समर्थ रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान पुरूष होंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। आप अपने पराक्रम एवं परिश्रम से सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे। जीवन में धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप में निर्भयता तथा लगनशीलता का भाव भी विद्य मान रहेगा फलतः कार्य क्षेत्र में आप प्रभावशाली रहेंगे सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि भी बनी रहेगी।

आप एक महत्वाकांक्षी पुरूष होंगे तथा अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए सर्वदा यत्नशील होंगे। धनसंग्रह के प्रति आपकी तीव्र रूचि होगी। आप जीवन में महत्वपूर्ण कार्यों को भावुकता से नहीं अपितु बुद्धि से सम्पन्न करेंगे।

लग्न में शनि की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता भी होगी। पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा की भावना रहेगी तथा उनकी सेवा करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। परिवार की उन्नति एवं मर्यादा की वृद्धि के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके द्वारा परिवार की प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि में वृद्धि होगी तथा समाज एवं कार्य क्षेत्र में आप एक प्रतिष्ठित तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे।

आप एक चतुर एवं विद्वान व्यक्ति होंगे तथा अपनी बुद्धिमता एवं सूझबूझ से सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। स्त्री का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु दाम्पत्य सम्बन्धों में मधुरता बनी रहेगी। आप एक कर्तव्यपरायण एवं ईमानदार व्यक्ति होंगे जिससे अधिकारी तथा आपके सहयोगी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा आप नित्य उन्नति मार्ग पर अग्रसर होंगे।

धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा होगी परन्तु धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को यदा कदा ही सम्पन्न करेंगे लेकिन इस संदर्भ में आप यदा कदा तीर्थ यात्रा आदि कर सकते हैं। मित्र वर्ग में आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इस प्रकार आप विद्वान परिश्रमी लगनशील एवं पराक्रमी पुरूष होंगे तथा

सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आत्मविश्वासी पुरूष होंगे तथा अपने विचारों को बिना किसी हिचकिचाहट के प्रदर्शन करते हुए अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे इससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। जीवन में व्यवधानों तथा समस्याओं का आप दृढ़ता पूर्वक सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा इसका अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपको जो भी रूचिकर लगेगा वही आप अन्य जनों के समक्ष कहेंगे तथा इस बात की कोई चिन्ता नहीं करेंगे कि अन्य जनों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा या वे किस रूप में उसे ग्रहण करेंगे। आप अपने समीपस्थ संबंधियों से औपचारिक संबंध रहेंगे परन्तु अवसरानुकूल उनसे घनिष्ठ संबंध स्थापित करने के भी उत्सुक रहेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा। साथ ही वाणी अत्यंत ही मधुर एवं ओजस्वी रहेगी तथा अन्य जनों को वाणी द्वारा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। सांसारिक धनऐश्वर्य एवं भौतिक सुख संसाधनों से आप युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा समय समय पर आप धार्मिक कार्य कलापों तथा उत्सव का भी आयोजन करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप स्थिर धन के स्वामी वाहन आदि से युक्त तथा यशस्वी पुरूष होंगे। रस युक्त पदार्थ आपको प्रिय लगेंगे तथा धर्म की उन्नति के लिए सर्वदा अपना योगदान प्रदान करते रहेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिजीवी प्राणी होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी अच्छी रहेगी एवं किसी भी विषय का ज्ञान आसानी से प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा उनका आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपके लिए वे कर्तव्य परायण तथा आज्ञाकारी होंगे तथा आपका भी उनके प्रति गहरा लगाव रहेगा। पारिवारिक शान्ति एवं खुशहाली के लिए आप एक दूसरे की कमियों की उपेक्षा करेंगे।

आप एक पराक्रमी तथा साहसी पुरूष होंगे तथा परिश्रमशील कार्यो को करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आप नीति के भी ज्ञाता होंगे एवं मंत्रणा या सलाह संबंधी कार्य आसानी से सम्पन्न करेंगे। सांसारिक परेशानियों एवं समस्याओं का समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे तथा किसी भी कार्य को तब तक सम्पन्न करेंगे जब तक कि उसमें सफलता प्राप्त न कर लें। जीवन में संचार साधनों यथा दूरभाष, दूरदर्शन या वाहन संबंधी सुविधाएं अर्जित करेंगे तथा इनका उपभोग करते समय स्वयं को अन्य जनों से श्रेष्ठ अनुभूति करेंगे। संगीत के प्रति भी आपकी गहरी रूचि रहेगी। समस्त भौतिक सुखों का भी उपभोग करेंगे। आपकी समय समय पर दूर समीप की यात्राएं सम्पन्न होती रहेंगी तथा इनसे आप इच्छित लाभ एवं धन अर्जित करेंगे। साथ ही इनसे आपको ख्याति प्राप्त होगी तथा सामाजिक सम्मान में भी वृद्धि होगी। समाचार पत्र तथा अन्य सूचना संबंधी लेखों को आप चाव से पढ़ेंगे तथा रिक्त समय में आप इसका पूर्ण सदुपयोग करेंगे। इसके अतिरिक्त आप बातचीत एवं विचार से शांत प्रकृति, पुत्र.पौत्र से युक्त, गुरू तथा मित्र प्रेमी, धनवान तथा अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कुम्भराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप सासंसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगे तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपके पास आधुनिक सुख संसाधनों की बहुलता रहेगी। आप एक वैभव एवं ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में भी आपका यथोचित स्तर बना रहेगा एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति की आपको आवश्य प्राप्ति होगी। भाईयों के प्रभाव एवं सहयोग से भी आप वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति को प्राप्त करेंगे। इससे आपके ऐश्वर्य तथा वैभव में वृद्धि होगी तथा परिश्रमी एवं पराक्रमी स्वभाव होने के कारण अन्यत्र से भी वांछित धन-सम्पत्ति अर्जित करेंगे। आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से शीध्र एवं विशिष्ट लाभ के योग बनते हैं। अतः अचल सम्पत्ति पर ही अधिक निवेश करना चाहिए।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा आपका घर सामान्य रूप से आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से परिपूर्ण होगा तथा इसकी स्वच्छता एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए आप यथोचित प्रबंध करेंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही होगी। इसके अतिरिक्त वाहन से भी युक्त होंगे तथा युवावस्था से ही इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी तेजस्वी, शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा वह भौतिकतावादी भी होगी एवं परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा एवं अवसरानुकूल उनसे आप वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति कर सकते है। आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आप भी सुख दुख में उनको पूर्ण सहयोग देंगे लेकिन परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में मधुरता कम ही होगी अतः ऐसी स्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा लेकिन छोटी कक्षाओं में आप अच्छे अंक अर्जित करके परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर लेंगे लेकिन स्नातक परीक्षा उतीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम एवं बुद्धिमता का प्रदर्शन करना पड़ेगा। यदि आप किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा करें तो यह आपके लिए उत्तम रहेगा तथा उसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। अतः आपको तकनीकी पाठ्य क्रम पर ही विशेष केन्द्रित रहना चाहिए।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने सम्स्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सकारात्मक निर्णय लेने की भी क्षमता विद्यमान होगी जिससे आपको वांछित सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा आपके इस गुण से अन्य जन भी आपसे प्रभावित होंगे। आप अपनी तीव्र बुद्धि से कठिन से कठिन समस्याओं का भी उचित समय पर समाधान करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रूचि कम ही होगी लेकिन आधुनिक विज्ञान, आयुर्विज्ञान या तकनीकी क्षेत्र में आप पूर्ण रूचि का प्रदर्शन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इन क्षेत्रों में आप कोई शोध कार्य या नवीन सिद्धांत के प्रतिपादन में भी समर्थ हो सकते है। इस प्रकार अपनी विद्वता से आप समाज में सम्मान जनक स्तर अर्जित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभाव में मीन राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में यद्यपि आपकी रूचि कम होगी परन्तु आपका प्रेम भावुकता से हीन होगा तथा इससे आदर्शवादिता, नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टि कोण होगा एवं भावनात्मक आकर्षण की ही प्रबलता होगी। अतः आप प्रेम- प्रसंग में सफल भी हो सकते है।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति की अधिकता होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सम्मान एवं आदर का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी समान्यतया वे तत्पर होंगे परन्तु वे स्वतन्त्र प्रवृति के होंगे अतः यदा-कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बिना माता-पिता की सलाह लिए भी सम्पन्न कर सकते है। लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चपहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास बना रहेगा। वृद्धावस्था में बच्चों से आपको प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सेवा एवं सहयोग भी मिलता रहेगा जिससे आप वृद्धावस्था में सुख की अनुभूति करेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे बुद्धिमान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी सिद्ध होंगे तथा प्रारम्भ से ही इस क्षेत्र में विशेष उन्नति का प्रदर्शन करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा दीक्षा का आधुनिक परिवेश में प्रबन्ध करेंगे तथा किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे जिससे वे जीवन में अच्छी उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करके आपकी आकाक्षांओं को पूर्ण करेंगे। इसके अतिरिक्त वे अपने कार्यो में निपुण एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य सामाजिक जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे तथा वे भी उन्हें वांछित स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली समझे जायेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपके विरोधी या शत्रु कोई उच्चाधिकारी या उच्च व्यक्ति होंगे। साथ ही आपके शत्रुओं की संख्या भी अधिक रहेगी तथा समाज में प्रत्येक क्षेत्र में आपके विरोधी उत्पन्न होंगे। यद्यपि आपके सेवक सभी अच्छे एवं ईमानदार होंगे परन्तु यदा कदा उनकी चोरी की आदत से आप किंचित परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। साथ ही आपके गुप्त रहस्यों के बारे में भी वे जानकारी रखेंगे तथा अवसरानुकूल अन्य जनों के समक्ष आपके रहस्यों को उजागर करेंगे जिससे मान सम्मान में न्यूनता आएगी। आप अत्यधिक व्ययशील प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा उन्मुक्त रूप से धन व्यय करेंगे इससे यदा कदा आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा तथा कर्ज आदि भी लेना पड़ेगा। साथ ही ऋणदाता आप पर कोई मुकद्दमा भी दायर कर सकते है क्योंकि आप आसानी से ऋण वापस नहीं कर पाएंगे। अतः ऋण लेने की प्रवृति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए। साथ ही अन्य फौजदारी मामलों में भी आपको आर्थिक नुकसान हो सकता है लेकिन अत्यधिक परिश्रम एवं समय के बाद आपको इसमें सफलता अवश्य मिलेगी।

आपके मामा और मामियों का स्वभाव अच्छा रहेगा तथा समाज में वे सम्मानीय रहेंगे। लेकिन वे अल्पमात्रा में कंजूस प्रवृत्ति के होंगे अतः जितना अपनत्व या लगाव प्रदर्शित करेंगे उसके विपरीत अल्प मात्रा में ही सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त कार्य प्रारंभ में सहयोग न करके अन्त में सहयोग करेंगे। साथ ही आपके मुकद्दमे भी सामान्य रूप से चलते रहेंगे। इस प्रकार न्यूनधिक रूप से आप मुकद्दमे से संबध रखेंगे तथा अन्त में आपको इनमें सफलता प्राप्त होगी तथा मान सम्मान में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त खान पान में भी आपको यथोचित परहेज रखना चाहिए अन्यथा रक्त विकार संबन्धी परेशानियां हो सकती है।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है सामान्यतया सप्तम भाव में वृष राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील परिश्रमी धनाढ्य एवं बुद्धिमान होता है। वह पराक्रमी साहसी तथा व्यावहारिक होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की होंगी परन्तु तेजस्विता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा। सांसारिक कार्य कलापों को वह व्यावहारिकता एवं बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। नैतिकता के प्रति भी उनकी रूचि होगी जिससे सुख संसाधनों के प्रति भी लालयित होगी। अपने महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता एवं विधिपूर्वक सम्पन्न करेंगी। कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी देखने में सुंदर एवं लालिमा लिए गौरवर्ण की होंगी तथा उनका कद भी मध्यम होगा शारीरिक संरचना की दृष्टि से उनका सौन्दर्य आकर्षण होगा एवं अन्य अंग प्रत्यंग भी पुष्टता एवं सुडौलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व के आकर्षण में वृद्धि होगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए समयानुसार व्यायाम या योग क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगी। वृष राशि के प्रभाव से संगीत एवं कला में भी रूचिशील होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं का संग्रह करेंगी।

सप्तम भाव में वृष राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथोचित समय पर होगा। आपका विवाह बंधु या संबन्धियों के माध्यम से होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव रहेगा। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को एक दूसरे की सहयोग तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार से होगा एवं आर्थिक एवं सामाजिक रूप से वे समृद्ध होंगे। विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके सामान्य संबंध होंगे तथा भविष्य में भी उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा करेंगी। देवर एवं ननद भी उनके सद्व्यवहार से प्रसन्न होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे ।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति होगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप अध्यात्म विज्ञान में अत्यधिक रूचिशील रहेंगे। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में भी श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आपकी पूर्वाभास शक्ति उत्तम रहेगी तथा अन्तर्प्रज्ञा के द्वारा भविष्यवाणी करने में समर्थ होंगे। वास्तव में संसार की असमान्य बातों में आपकी प्रगाढ़ रूचि रहेगी तथा इन विषयों पर समय समय पर कार्य करते रहेंगे। इसके साथ ही ज्यौतिष या आध्यात्मिक क्षेत्र में आपको विशिष्ट ख्याति तथा सम्मान भी मिल सकता है।

आपको अपने वृद्धजनों से पैतृक सम्पत्ति में जमीन जायदाद की प्राप्ति होगी तथा काफी चल एवं अचल सम्पत्ति आपके नाम रहेगी जिससे आप पूर्ण सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। आपात्काल में बिना किसी कार्य को किए हुए अपनी जायदाद को बेचकर आर्थिक सुदृढ़ता भी प्राप्त कर सकते है। साथ ही आपका जीवन भी आराम से व्यतीत होगा तथा समस्त सुख सुविधाओं से युक्त रहेंगे। शादी आदि के अवसर पर आपको काफी मात्रा में आपकी मांग पर दहेज की प्राप्ति होगी। इसमें धन आभूषण वाहन तथा अन्य आधुनिक उपहार होंगे। बीमे आदि से भी आपको लाभ होगा तथा इसकी एजेंसी के द्वारा आप अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं। आपके जीवन में चोरी डकैती या अन्य दुर्घटनाएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इससे आपको कोई विशेष हानि या परेशानी नहीं होगी। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन को सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप एक भाग्यवादी पुरूष होंगे। आप अपने को अन्य जनों के समक्ष आवश्यकता से अधिक धार्मिक प्रदर्शित करने की कोशिश करेंगे तथा पारिवारिक परम्परानुसार धर्म का अनुपालन करेंगे। साथ ही भगवान के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा दैनिक पूजा या अन्य प्रकार से आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त कर सकते हैं लेकिन यदा कदा इसमें उदासीनता का भाव भी रखेंगे। अतः दैनिक पूजन कार्यक्रम में व्यवधान रहेगा।

आप उच्चशिक्षा प्राप्त करने के उत्सुक रहेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में आप अध्यात्मिक, तंत्र मंत्र एवं ज्यौतिष आदि का अध्ययन भी कर सकते हैं। साथ ही सन्तवाणी का भी ध्यान से श्रवण करेंगे। आपकी प्रवृति परिवर्तनीय होगी। अतः आप समयानुसार अपने शब्दों या वादों को परिवर्तन करेंगे। आप कई तीर्थ स्थानों की यात्राएं भी सम्पन्न कर सकते है तथा अपने धर्म के समस्त पवित्र ग्रंथों का श्रद्धा पूर्वक अध्ययन करेंगे। जीवन में समय समय पर लम्बी यात्राएं सम्पन्न करते रहेंगे तथा इनसे आपको इच्छित धनार्जन भी होगा परन्तु अपनी प्रवृति एवं आर्थिक मामलों में संकीर्णता के कारण यदा कदा आपके मान सम्मान में न्यूनता भी आएगी।

आप एक आदर्श तथा प्रसिद्धि व्यक्ति होंगे। यद्यपि आप कई बार धमार्थ कुछ दान देने की सोचेंगे परन्तु वास्तव में यह दिखावा होगा तथा आप किसी ऐसे कार्य को करना पसंद नहीं करेंगे जिसमें धन का व्यय होता हो परन्तु अपने पर आप आवश्यकताओं से अधिक व्यय करेंगे लेकिन अन्य जनों की सेवा या सहायता के लिए कुछ भी नहीं करेंगे। पौत्रों से आपको सुख एवं आनन्द प्राप्त होगा वास्तव में आप पूर्वजन्मों के पुण्यों से ही इस जीवन में सुख ऐश्वर्य की अनुभूति कर रहें है लेकिन अगले जीवन के लिए भी आपको कुछ करने की ओर प्रवृत होना चाहिए। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक प्रवृति से युक्त उपवासकर्ता, तीर्थ स्थलों की यात्रा करने वाले तथा धर्म के प्रति श्रद्धालु रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है सिंह राशि अग्नितत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। कार्यक्षेत्र में आप सामान्यतया उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा नवीन आयाम स्थापित करने में सफल होंगे।

आपके लिए आजीविका की दृष्टि से आपके लिए प्रशासकीय सेवा, औषधिविज्ञान, सरकारी कर्मचारी, कम्प्यूटर साइंस, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, विद्युत विज्ञान, पर्यटन (पर्वतीय) क्षेत्र, उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। साथ ही वैज्ञानिक शोध क्षेत्र में भी आप वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित कर सकते है। अतः सतत उन्नति एवं लाभ के लिए आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही आजीविका का चयन करना चाहिए। इससे उन्नति में आपको अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए औषधि व्यापार, ऊनी वस्त्र, रत्न संबंधी कार्य, विद्युत एवं मैकेनिकल उपकरण, इंजीनियरिंग उपकरण, पर्यटन केंद्र का स्वामित्व, सरकारी ठेके आदि से लाभ एवं प्रचुर मात्रा में धन अर्जित होगा। अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापार को प्रारंभ करेंगे तो इससे आपको इच्छित उन्नति की प्राप्ति होगी तथा उन्नति में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको इन्हीं क्षेत्रों एवं वस्तुओं का व्यापार करना चाहिए।

जीवन में आपको उच्च मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी प्राप्त करने में समर्थ होंगे। साथ ही समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे इससे आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। आप सामाजिक एवं शैक्षिणक संस्थाओं में भी किसी सम्मानीय सदस्य या पदाधिकारी के रूप में कार्य कर सकते है इससे आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी योग्य एवं शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा साथ ही सामाजिक जनों के कल्याणकारी कार्यो के करने में भी समर्थ होंगे। आपके प्रति उनके मन में अपनत्व का भाव होगा तथा उच्चस्तर पर शिक्षा का यथोचित प्रबंध करेंगे। कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा उनके प्रभाव एवं सहयोग से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे साथ ही आप भी पिता के सम्मान वृद्धि के लिए परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी पुरूष होंगे तथा मन में विभिन्न प्रकार की इच्छाएं तथा उमंगें विद्यमान रहेंगी। चूंकि आप एक पराक्रमी तथा परिश्रमी पुरूष होंगे अतः जीवन में आपकी अधिकाशं आकांक्षाएं पूर्ण हो जाएंगी। आपकी कुंडली में आर्थिक महत्वाकांक्षा की प्रबलता रहेगी साथ ही विभिन्न प्रकार से धन अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेंगी। आप लेखन कार्य, ज्यौतिष, कमीशन एजेंट, गणित या शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हो सकते है अथवा इनसे आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही व्यापार के द्वारा भी आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी।

आपको बड़े भाइयों की अपेक्षा बहिनों से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही उनकी आपके प्रति स्नेह एवं पूर्ण अपनत्व का भाव रहेगा एवं आपको सुख दुख में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा अवसरनुकूल माता की तरह आपका पालन पोषण तथा मार्ग निर्देशन करेंगी।

आप मित्र मंडली के मध्य अत्यन्त ही प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे तथा आपके सभी मित्र चतुर चालाक एवं शिक्षित होंगे। अवस्था के साथ साथ मित्रों के आप पथ प्रदर्शन भी करेंगे तथा वे आपसे हमेशा सलाह लेते रहेंगे। आपका सामाजिक स्तर भी सामान्यतया उच्च रहेगा तथा अपने समाज के मध्य प्रतिष्ठित एवं आदरणीय समझे जाएंगे। साथ ही अन्य जनों की सेवा एवं परोपकार संबंधी कार्यो को भी समय समय पर सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अन्य क्षेत्रों में भी उन्नतिशील रहेंगे तथा धन ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर अपना समय व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक क्षेत्र में सुदृढ़, धन ,वाहन एवं व्यापार आदि से उच्च स्थिति में रहेंगे। साथ ही आप एक अधिकारी स्तर के व्यक्ति होंगे तथा सुदंर घर से भी युक्त रहेंगे आपकी आय निरन्तर होती रहेगी क्योंकि आपको धनार्जन करना अच्छी तरह आता है। आपके सरकारी या अर्धसरकारी बांडो या संस्थाओं में पूंजीनिवेश रहेगा जिससे समय समय पर पूर्ण लाभ होगा। साथ ही आप एक ईमानदार उद्योगपति भी हो सकते है। आप आजीवन आर्थिक रूप से सुरक्षित रहेंगे तथा प्रचुर मात्रा में आय स्रोत भी प्रशस्त होंगे। आपकी बचत उत्तम रहेगी तथा अपने कुशलता से धनार्जन करके बचत भी करेंगे।

आपका रहन सहन तथा खान पान उच्च स्तर का रहेगा तथा इसी स्तर को हमेशा बनाएं रखेंगे लेकिन आपको इसमें अत्यधिक व्यय करना पड़ेगा। आपको स्वादिष्ट एवं महंगा भोजन करना भी पसन्द रहेगा जिसके लिए आप अच्छे होटलों में भी जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त मित्रों आदि पर भी आप मुक्त भाव से व्यय करेंगे।

आपकी यात्राएं भी सामान्यतया होती रहेंगी तथा इनसे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आपकी देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी होगी ये यात्राएं कार्य वश या भ्रमण के लिए होंगी क्योंकि आपको अच्छे स्थानों की सैर करना तथा अच्छे दृश्य देखना अच्छा लगता है। इस प्रकार आप प्रसन्नता पूर्वक धनार्जन करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु पंचम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि पंचम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि अष्टम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि नवम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि अष्टम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। आपको कार्य क्षेत्र में मित्र, सहयोगी व पत्नी का भी सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

14 मई के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में आपके कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। अतः कोई नया काम प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। एकादश एवं द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी और आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं बड़े भाई का सहयोग प्राप्त होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। 30 मई के बाद चतुर्थस्थ राहु के कारण आपके परिवार में किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य खराब हो सकता है जिसमें धन का व्यय सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे।

30 मई के बाद चतुर्थ स्थान का राहु आपकी पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। अचानक परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। आपके

माता पिता एवं पुत्र का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा और आप भी मानसिक रूप अशान्त व तनावग्रस्त रहेंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में पंचम स्थान का राहु संतान संबंधित चिन्ताएं दे सकता है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। बच्चों को सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है।

दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा है। 14 मई के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय गर्भवती स्त्रियों को विशेष सावधानी की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करें जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहे।

परन्तु 14 मई के बाद का समय आपके स्वास्थ्य के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से प्रभावित हो सकते हैं। अष्टमस्थ गुरु वायु तत्व राशि में होने कारण सांस, संक्रामक रोग व पेट संबंधित बीमारियों से कष्ट दे सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है।

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता की उम्मीद कम ही है। 14 मई के बाद उच्च शिक्षा में रुकावटें भी आ सकती हैं। बेरोजगार जातकों को रोजगार हेतु कुछ समय और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि छोटी मोटी यात्रा कराती रहेगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का घ से दूर स्थानान्तरण हो सकता है।

यह स्थानान्तरण आपके लिए अनुकूल स्थान पर नहीं होगा। 14 मई के बाद द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी

करेंगे। मई के बाद अधिक व्यस्तता के कारण पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाऐंगे।

- नित्य प्रति सूर्य नमस्कार करें व सूर्य को जल चढ़ाएं।
- शनिवार को काली वस्तुओं का दान करें एवं गरीबों को लोहे का तवा दान करें।
- गुरुवार के दिन पीली वस्तुएं जैसे केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटें और व्रत रखें।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे औंर उसके बाद मकर राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।वर्ष के पूर्वार्द्ध में अष्टम स्थान का गुरु आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बना रहा है अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने कार्य व्यवसाय में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करना चाहिए। आपके कार्य क्षेत्र में कुछ गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए सावधानी बरतें।

02 जून के बाद कोई भी कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें आपका भाग्य साथ देगा। व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद दशमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी पदोन्नती भी होगी और आपको कार्यस्थल पर मान-सम्मान भी प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप आर्थिक बचत करने में सफल रहेंगे। रत्न आभूषण इत्यादि का लाभ प्राप्त होगा। अचल संपत्ति के साथ-साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

02 जूनके बाद नवम स्थान का गुरु आर्थिक उन्नति के लिए और भी अच्छा रहेगा। आप इच्छित बचत कर पायेंगे। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यो में धन खर्च हो सकता है। आप बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। उनकी बीमारी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष बहुत अनुकूल नहींरहेगा। चतुर्थ स्थान का राहु पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है।

02 जून के बाद समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आपको छोटे भाई-बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा जिससे आपके पराक्रम में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वगृही होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति में मददगार होगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके बच्चों कीउच्च शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष करेंगे। प्रथम संतान के लिए विवाह का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा।आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

02 जून के बाद आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में अधिक रूचि बढ़ेगी। आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारिरीक रूप से आरोग्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। विद्यार्थियो की पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य के कारण पढ़ाई में व्यवधान बना रहेगा।

02 जून से इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित शिक्षा के लिए समय काफी अच्छा है। तकनिकि शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। बेरोजगार जातकोंको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा करेंगे। 02 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती है। 31 अक्टूबर के बाद आपकी जन्म भूमि की यात्रा भी हो सकती है या पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा।पंचमस्थ शनि के प्रभाव से साधना, योग या मन्त्र सिद्धि के प्रति आप अधिक समर्पित होंगे। 02 जून के बाद आप किसी को गुरु बना कर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें।
- वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि पंचम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं पंचम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष तृतीय भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपको कार्य व्यवसाय में सफलता मिलेगी। इस वर्ष आपका भाग्य आपके साथ है इसलिए आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ेगा।

जून के बाद समय अति उत्तम है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। आपके कार्य व्यवसाय में समस्त शत्रुओं का दमन होगा। इस समय के अंतराल में आपके ब्राण्ड को पहचान भी लि सकती है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को भी लाभ हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुबिधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भुमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। धन की अनुकूलता के कारण आप खर्च भी अधिक करेंगे। 26 नवम्बर के बाद अचानक आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी, जिससे आप आर्थिक स्थिति को और भी सुदृढ़ करने मे सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीयस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रवाभ से आपके समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ-चढ़ कर भाग लेंगे।

जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। परिवार में

परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष अति उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गर्भाधान के लिए बहुत ही शुभ समय चल रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्रप्ति होगी। शिक्षा के प्रति इनकी रूचि बढ़ेगी व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है, क्योंकि भाग्य साथ नहीं देगा। अपने मेहनत के बल पर ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करना पड़ेगा। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद मौसम जनित बीमारी से स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है परन्तु आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। इस समय नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार आपके लिए लाभप्रद रहेगा। जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठ कर टहलना आपके स्वास्थ्य के लिए अमृत सिद्ध होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। उनको करियर में सफलता मिलेगा। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

जून के बाद प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी समय श्रेष्ठतम रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी जो अधिक अनुकूल या उन्नति कारक होंगी। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मस्थल की यात्रा हो सकती है अथवा अपने पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करते हैं। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ एवं अनुष्ठान संपन्न करेंगे, जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रों का पाठ करेंगे। आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा और उस ज्ञान के माध्यम से परमात्मा के प्रति आत्म समर्पण का भाव उत्पन्न होगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए जल में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक सफलता के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आय के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। आपके कार्य व्यवसाय में विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे। वरिष्ठ लोगों के सहयोग से आपके व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है। द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते है परन्तु वे आपका कुछ नही कर पाएंगे और आप अपने सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

24 जुलाई से आपका समय और बढ़िया हो रहा है। व्यापार में बढ़ोत्तरी के संकेत है। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यापार के विस्तार के लिए अपना संचित धन भी खर्च कर सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। लाभ में निरन्तरता बनी रहेगी। फरवरी के बाद षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आपको शत्रु पक्ष से धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

24 जुलाई से रुका हुआ धन मिल सकता है। मातुल पक्ष के लोगों से आपको लाभ होगा। द्वितीय स्थान का राहु अचानक कुछ अनावश्यक व्यय करा सकता है परन्तु सामान्य काम काज पर उसका कोई प्रभाव नही पड़ेगा। निवेश के मामले में सावधान रहें। भाई-बहन या पुत्र के विवाह अवसर पर भी धन व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर परिवार में शान्ति व सहयोग का वातावरण बना रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर द्वितीय स्थान में होगा। उस समय अचानक आपके परिवार में विषमता की स्थिति बन सकती है। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी पड़ेगी।

संतान

वर्षारम्भ में पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान के लिए उत्तम योग बन रहा है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे।

गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह हो सकता है। मार्च से जून तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा उसके बाद फिर से अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी जिससे आप पूर्ण रूप से स्वस्थ बने रहेंगे। फरवरी के बाद मौसमजनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 मई के बाद आर्थिक स्थिति को लेकर कुछ चिंताएं हो सकती हैं। द्वादशस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी बीमारियों से परेशानी हो सकती है परन्तु छठे स्थान का शनि शीघ्र ही स्वस्थ भी कर देगा। 24 जुलाई से स्वास्थ्य अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। बेरोजगारों को रोजगार मिल सकता है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

शनि ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप शत्रुओं को पछाड़कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी छोटी-छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं होती रहेंगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है।

फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। गुरु ग्रह के प्रभाव से आप सामाजिक कार्यों हेतु यात्राएं कर सकते हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर व तन्त्र-मन्त्र के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- माता-पिता की सेवा करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसायिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 29 मार्च के बाद समय और उत्तम हो रहा है। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल होने के कारण आप व्यवसाय में इच्छित लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आप कोई नया व्यापार भी शुरू कर सकते हैं और इसमें आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे।

25 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर फिर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। नौकरी करने वालों को कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। परिवार में खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाऐंगे। 29 मार्च से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव से आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिल सकता है।

25 अगस्त के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय अनावश्यक खर्च से आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः अभी से कुछ अतिरिक्त धन संचय करें। परिवार में किसी सदस्य का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है जिसमें आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीयस्थ राहु के कारण आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। अतः अच्छा यही

होगा की अपनी अपने सहन-शक्ति को बढ़ाएं। अन्यथा आपके संबंध खराब हो सकते हैं। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर बने रहेंगे। आपके बड़े भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

29 मार्च के बाद घरेलू वातावरण में कुछ अनुकूलता आएगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावारण बनेगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। वर्षान्त में सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 29 मार्च से गुरु का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है। उस के बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा और उनकी उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। आपको संतानोत्पति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण पढ़ाई-लिखाई भी प्रभावित हो सकती है। संतान को लगातार अथक प्रयास करने के बाद ही सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। षष्ठस्थ शनि ग्रह के फलस्वरूप आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे और अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद समय और अच्छा हो रहा है।

25 अगस्त के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं यकृतजनित बीमारी से परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को छोड़कर अपने करियर में आगे रहेंगे। 29 मार्च से विद्यार्थियों के लिए समय और भी अच्छा हो रहा है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती ही रहेंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छा योग बन रहा है।

25 अगस्त के बाद आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। नवम स्थान पर शनि की दृष्टि आपको धार्मिक यात्रा भी कराएगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा करना, गरीबों को दान देना, भूखे को खाना खिलाना और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरुदीक्षा लेंगे। धर्म पत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें और काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे। अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। 17 अप्रैल से शनि ग्रह का गोचर व्यावसायिक जीवन के लिए अच्छा नहीं है। आपके संबंधों में खटास उत्पन्न हो सकती है। किसी भी नए रिश्ते की शुरुआत के लिए भी यह समय शुभ नहीं होगा। अतः इस समय के अंतराल में आपको कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

23 सितंबर के बाद आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय करते हैं तो अच्छा लाभ होगा और आपको मित्रों का पूरा सहयोग मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक तौर पर यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी ले कर आ रहा है। साल की शुरुआत में निवेश करना सही नहीं होगा क्योंकि द्वितीय स्थान का राहु जल्दबाजी में गलत फैसला करा सकता है। राहु के गोचर के बाद शारीरिक बीमारी दूर करने में आपका व्यय होगा।

इस समय आप इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि आने वाले समय में आर्थिक उन्नति किस प्रकार की जाए। क्योंकि 1 मई से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से आय के मार्ग प्रभावित होंगे जिससे आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। इसलिए आपको आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए और किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश नहीं करना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में द्वितीस्थ राहु के प्रभाव से परिवार में विचारों की भिन्नता तथा व्यर्थ के वाद-विवाद सामने आ सकते है। संयुक्त परिवार एकल परिवार में बंट सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान व प्रेम प्रणय के लिए अच्छा रहेगा। 04 फरवरी के बाद वैवाहिक जीवन में निष्ठावान बने रहना आपके गृहस्थ जीवन के लिए हितकारी रहेगा।

मामा एवं अन्य संबंधियों को अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह समय बढ़िया रहेगा।

मई के बाद अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखे। भाई-बहनों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। सितम्बर के बाद समय बहुत बढ़िया रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा। पंचम भाव पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

राहु ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। मई से अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा। गलत संगत उनकी उन्नति में बाधक बन सकती है।

स्वास्थ्य

इस साल आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है ताकि आप अपने जीवन का भरपूर लाभ उठा सकें फिर चाहे व्यावसायिक जीवन हो या व्यक्तिगत जीवन यदि आप स्वस्थ नहीं होंगे तो इसका असर आपके जीवन पर पड़ेगा। इसलिए आपके लिए यह बहुत ही जरूरी है कि आप साल की शुरुआत से ही इस ओर ध्यान देना शुरू कर दें। छोटी-मोटी मौसमजनित बीमारी, या सर्दी-जुखाम से आपको परेशानी हो सकती है।

01 मई के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिससे आप तनाव से भी ग्रसित हो सकते हैं। स्वस्थ्य जीवन के लिए आप योग, ध्यान या सुबह-सुबह व्यायाम नियमित रूप से करें। खान-पान का विशेष ध्यान रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रथम मास श्रेष्ठ है। छठे स्थान का शनि इच्छित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करा सकता है।

मई के बाद आप किसी विवाद अथवा कलह में न पड़े और ध्यान अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें, क्योंकि सारे मुख्य ग्रह प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अस्थिरता बनी रहेगी। जिस व्यक्ति को अभी तक नौकरी नहीं मिली है। उनको कुछ दिन और इन्तजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय आपकी यात्राएं अधिक सुखद व मनोरंजन से परिपूर्ण रहेंगी।यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

1 मई के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। विदेशी संपर्कों से आपको लाभ प्राप्त होगा। वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्यांकि राहु एवं शनि का गोचर आपके लिए अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, दान पुण्य, पूजा-पाठ, मंत्र जाप, यज्ञ, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु लग्न भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं लग्न भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्तर के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए आप उन सपनों को पूरा करने के लिए जी-तोड़ मेहनत करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रह गोचर अनुकूल होने के कारण समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बहुत आसान होगा। आप अपने अधिकारियों की नजरों में अच्छे बने रहेंगे।

9 अगस्त के बाद राहु का गोचर व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहा है। इस अवधि में आपका अपने प्रति विश्वास ही आपको लगातार विजय दिलाएगा। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सिर्फ लाभ और लाभ को दर्शाता है। अपने लक्ष्यों के प्रति आपका उत्साह उजागर हो जाएगा। निवेश करने के लिए भी यह एकदम उपयुक्त समय होगा। 18 फरवरी के बाद द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

8 अगस्त के बाद आर्थिक समृद्धि में अचानक कमी आएगी। द्वादश स्थान का राहु कुछ ऐसे खर्चे ला देगा जिससे आपको आर्थिक कमी आ सकती है। अतः इस समय कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों में निवेश न करें और किसी को उधार पैसा न दें।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। 18 फरवरी के बाद परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक

लगाव बढ़ेगा।

8 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु एवं शनि ग्रह का संयुक्त प्रभाव आपकी माता के लिए अच्छा नहीं है। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव आपको अच्छा नहीं लगेगा। आप सामाजिक गतिबिधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान के लिए यह उत्तम समय चल रहा है।

8 अगस्त के बाद बच्चों के साथ प्रेम व मधुर संबंधों में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ से ही आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है, जिससे आप अपने जीवन का भरपूर लाभ उठा सकें। व्यावसायिक जीवन हो या व्यक्तिगत यदि आप स्वस्थ नहीं होंगे तो इसका असर आपके जीवन पर तो पड़ेगा ही। आप किसी बड़े रोग से आहत नहीं होंगे लकिन कुछ परेशानियों का सामना जरुर करना पड़ सकता है।

राहु का गोचर आपके स्वास्थ्य के लिए और प्रतिकूल हो रहा है अतः खुद को बीमारिओं से बचाएं। इस दौरान आप तनाव से भी ग्रसित हो सकते हैं। अपने जीवन में सही तालमेल बिठाने के लिए आवश्यक है कि आप खान-पान, योग, ध्यान या सुबह-सवेरे व्यायाम नियमित रूप से करें। 15 अक्टूबर के बाद आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार आएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रथम माह विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकि शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है।

8 अगस्त के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। इस समय आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए। अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर तैयारी करते रहना चाहिए क्योंकि अभी की मेहनत आने वाले समय में रंग लाएगी और आप अपने लक्ष्य में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

नवम पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। तीर्थ यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 8 अगस्त के बाद यात्रा करते समय या बाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है। क्योंकि राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल में चोरी होने के प्रबल संकेत है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढाएं।
- दुर्गा जी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं सप्तम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध सकारात्मक रहेगा। यह समय आपके व्यापार में कुछ उपलब्धियां लेकर आएगा। नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यावसायिक क्लाइंट के साथ एक सफल योजना के रूप में भी हो सकती हैं।

उत्तरार्द्धमेंसमय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। व्यावसायिक जीवन में अचानक व्यवधान आ सकता है। मई के बाद कार्यस्थल पर किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। यदि आप साझेदारी में काम कर रहे हैं तो अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे। गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं।

धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी। यदि आप धन निवेश करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों से सलाह अवश्य लें।

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का उत्तरार्द्धसामान्यरहेगा।द्वादशस्थ राहु के कारण संचित धन में वृद्धि नहीं होगी। अचानक कुछ ऐसे खर्चे आजाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। इस समय के अंतराल में आप को बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा।

घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थगुरुके प्रभाव से इस वर्ष आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगाजिससे पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 5 मार्च से आपके छोटे भाईयों के लिय समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपकी धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

शनि ग्रह के गोचर के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपकेसम्बन्धबिगड़ सकते हैं। 12 अगस्त के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।यदि आप

अविवाहित हैं तो आपका विवाह भी हो सकता है।

संतान

वर्षारम्भ आपकी संतान के लिए ठीक-ठाक रहेगा। आपके बच्चे अपने विवेक व बुद्धि से अपने उन्नति के मार्ग बनाएंगे। 5 मार्च से आपके दूसरे बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधो में मधुरता आएगी जिससे आपके घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा।

मई के बाद आपकी प्रथम संतान के लिए समय प्रभावित हो रहा है। उस समय उनकी दिनचर्या व रहन-सहन पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए नहीं तो उनकीशिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है। पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वे अपने लक्ष्य से भी भटक सकते हैं।

स्वास्थ्य

यह वर्ष आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रस्त हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

मई के बाद आपका स्वास्थ्य और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कुछ समय के लिए आप अपने आप को ऊर्जा रहित महसूस करेंगे।लेकिनकिसी स्वास्थ्य संबंधित बड़ी समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। आप तनाव व चिंता मुक्त रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 5 मार्च के बाद भाग्य का पूर्ण सहयोग मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

5 मार्च के बाद विदेश में व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। विदेशी भाषा सीखने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत शुभ है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भयात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। 5 मार्च के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे।मई के बाद से विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मई के बाद तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बड़ेगा। गुप्त विद्या या तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्ध के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमानजी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गाजी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं द्वादश भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं चुतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। अष्टमस्थ शनि के कारण व्यावसायिक जीवन में थोडे बहुत झटके आएंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु एकादशस्थ राहु के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। आपमें से जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में हैं उन्हें वर्षान्त में सफलता मिलेगी। आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्यों की ओर बेझिझक, पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में ही कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि का योग बना हुआ है। अतः आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। द्वितीयस्थ मंगल पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण पारिवारिक सदस्य की बीमारी दूर करने में भी आपका धन व्यय हो सकता है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं, नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

18 मार्च के बाद चतुर्थ में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने के योग बन रहे हैं। एकादस्थ राहु के कारण अचानक आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। आर्थिक उन्नति के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। पारिवारिक या मांगलिक कार्यों में भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में ही पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है।

18 मार्च के बाद चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण का के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भवनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। आपके

माता-पिता के लिए समय काफी शुभ है। समाज में आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपका एक अगल व्यक्तित्व होगा।

संतान

पंचम स्थान पर राहु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित होगी। अतः इस समय के अंतराल में आपको उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है।

18 मार्च के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। आपके दूसरे बच्चे के साथ प्रेम समन्वय में वृद्धि होगी। यदि वे विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है। यदि आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

अष्टम स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव कि स्थिति बनाए रखेंगे। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इससे भी आपकी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। सुबह जल्दी उठ कर टहलना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

18 मार्च से समय उत्तम हो रहा है। केन्द्र स्थान में शुभ ग्रह की स्थिति प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुदृढ़ रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती भी है तो एकादश स्थान का राहु आपको शीघ्र ही अच्छा कर देगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को 18 मार्च के बाद नौकरी में अवसर मिलेंगे। माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये यह समय काफी शुभ है।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं या विदेशी भाषा सीखना चाहते हैं, तो यह समय आपके लिए शुभ है। यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त कर उनसे आगे निकलना चाहते हैं, तो अपनी नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 18 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आपके लिए बहुत अनुकूल रहेगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। आप अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप तीर्थ यात्रा व धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। मन्दिर निर्माण, धार्मिक उत्सव आदि कार्यों में आप बढ़-चढ के भाग लेंगे। 18 मार्च के बाद आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे। कर्म ही पूजा है, इस उद्देश्य को मानेंगे। दूसरे को भी यही उपदेश देकर कार्य करने के लिए प्रणीत करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें एवं प्राणायाम करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनि ग्रह का दान करें।
- सात मुखी रुद्राक्ष प्रातः शनिवार को धारण करें। आपको शनि की शुभता प्राप्त होगी।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध कार्य-व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 28 मार्च से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। शनि ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने ग्राहक को प्रभावित करने में सफल होंगे। यदि आप नौकरी में हैं तो बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपके अच्छे कार्य के लिए आपको पुरुस्कृत भी किया जाएगा। कार्य स्थल पर आपका मान-संमान भी बढ़ेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। अष्टम स्थान के शनि आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव करते रहेंगे। कुछ लोगों को अपने नौकरों से ज्यादा नुकसान हो सकता है और कुछ लोगों को कम, लेकिन नुकसान का होना तय है। इसलिए आपको अपने नौकरों पर ज्यादा विश्वास नहीं करना चाहिए। मित्र अथवा साझेदार विश्वासघात कर सकते हैं या फालतू की रणनीतियों के कारण भी हानि होने की संभावना है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध श्रेष्ठ रहने वाला है। धनागम के सारे बन्द मार्ग खुलेंगे। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपके सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घर परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बना रहेगा। इन सबके पीछे आपका ही

महत्वपुर्ण योगदान होगा। क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए बहुत ही लाभप्रद रहने वाला है। आपके माता-पिता के लिए समय काफी शुभ है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में चतुर्थ स्थान पर राहु केतु का प्रभाव होने से अचानक परिवार में किसी प्रकार की परेशानी आ सकती है। परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। पंचमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। अपने परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्यों का आयोजन होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। 28 मार्च से पंचम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए श्रेष्ठ है। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो उनके लिए यह समय अति श्रेष्ठ है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं तो अपने लक्ष्य में अवश्य सफल रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। अष्टमस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग हो सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। यदि कोई बीमारी पहले से चली आ रही है तो वह इस समय बढ़ सकती है, अतः पहले से ही सावधानी बरतें। शनि के कारण घटना-दुर्घटना का योग लगातार बना हुआ है अतः यात्रा के दौरान और वाहन चलाते समय बहुत सावधान रहें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत ही श्रेष्ठ रहने वाला है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी, जिससे आपकी शारीरिक व्याधियां दूर होंगी। आप अपने दैनिक कार्य में स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपने प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। जो आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहयोग करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

28 मार्च के बाद विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय बहुत उत्तम है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं, उनके लिए यह समय अनुकूल है।

13 जुलाई के बाद रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आप को विदेश यात्रा करा सकती है। तृतीय स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राएं कराती रहेगी। परन्तु 28 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होंगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्य अधिक होते रहेंगे। पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध और उत्तम रहेगा। पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन सूर्य को (तांबे के लोटे में अक्षत, लाल फूल एवं रोली डालकर) जल दें।
- रुद्राक्ष की माला धारण करें एवं अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित कर उसका पूजन करें।
- शनि चालीसा का पाठ करें एवं काली वस्तु का दान करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(20/01/2017 - 20/01/2033)

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु की महादशा 20/01/2017 को आरम्भ और 20/01/2033 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मानसिक अभिरुचि, बुद्धि, साहस, दृढ़ता, छोटे भाई-बहन, छोटी यात्रा, वाहन, बॉण्ड, गले, कन्धे, हँसली तथा स्नायु-तंत्र का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभग्रह है। आपकी जन्मकुण्डली में तृतीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि सातवें, नवें और ग्यारहवें भाव पर है और यह उक्त भावों के कार्यों को प्रभावित कर रहा है। अतः सोलह वर्षों की यह दशा आपके लिए शान्तिपूर्ण, समृद्धि दायक तथा स्वास्थ्यप्रद होगी।

स्वास्थ्य :

साहस, पराक्रम तथा शक्ति के तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी गुरु के कारण आपको शक्ति मिलेगी और आप हर तरह की कठिन परीक्षा का सामना साहसपूर्वक करेंगे। आपको कोई गम्भीर बीमारी नहीं होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

धन-सम्पत्ति :

तृतीय भाव में स्थित गुरु की दृष्टि ग्यारहवें भाव (नवें और सातवें भाव के अतिरिक्त) पर है। ग्यारहवाँ भाव लाभ का भाव है इसलिए आपको धन-सम्पत्ति में वृद्धि के अवसर मिलेंगे। इस दशा के दौरान आप अपनी आय के स्रोतों और चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करने में सक्षम होंगे।

व्यवसाय :

तृतीय भाव में स्थित ज्ञान और शिक्षा के कारक गुरु की (सातवें भाव के अतिरिक्त) ग्यारहवें तथा नवें भावों पर दृष्टि है। फलतः आपकी प्रवृत्ति साहित्यिक क्षेत्र की ओर होगी। आप लेखक या उपन्यासकार और एक साहित्यिक व्यक्ति हो सकते हैं। आप हर क्षेत्र में प्रगति करेंगे और भाई-बहनों तथा अन्य सहयोगियों, संबंधियों के सहयोग के फलस्वरूप आपको पर्याप्त लाभ मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

तृतीय भाव में स्थित गुरु की (नवें तथा ग्यारहवें भावों के अतिरिक्त) सातवें भाव पर दृष्टि है। सातवां भाव जीवनसाथी का भाव है। इसलिए आपके जीवनसाथी बहुत सहयोगी होंगे। इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन सद्भावपूर्ण तथा अनुकूल होगा। आपके बच्चे तथा छोटे भाई-बहन आपके आज्ञाकारी होंगे।

अंर्तदशा :- गुरु - शुक्र
(02/12/2024 - 03/08/2027)

आपके लिए बृहस्पति महादशा 20/01/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 02/12/2024 को प्रारंभ होकर 03/08/2027 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आप को सब सुख नसीब होंगे; उत्तम वस्त्रों से सुशोभित रहेंगे, धनी बनेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। उच्चपद और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। नेकी के कार्य करेंगे। आत्मसम्मान और आत्मविश्वास उत्तम रहेंगे। विवाह हो सकता है। व्यापार में लाभ उत्तम रहेगा। किसी को दिया कर्ज़ वापस मिल जाएगा। धनागम होगा। विवाह, अनुबंध, व्यापार और महिलाओं के माध्यम से लाभ होगा। मुकदमे में जीत होगी। उत्तम परिवार में विवाह हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को साझेदारी से लाभ होगा। आपके पिता को संतान से सुख मिलेगा। माता की आय अच्छी होगी। आपके भाई-बहनों के लिए आकांक्षाओं की पूर्ति, सुखकारी लघु यात्राएं, धन और स्वयं के प्रयास से सफलता का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी; प्रसन्न और संतुष्ट रहेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्राएं होंगी, सरकार से सहयोग मिलेगा, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रसिद्ध बनेंगे, सम्मानित होंगे। परामर्शदाताओं का प्रभाव बढ़ेगा। व्यापारियों को धनलाभ उत्तम होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। खानपान का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- गुरु - सूर्य
(03/08/2027 - 22/05/2028)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 20/01/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 03/08/2027 को प्रारंभ होकर 22/05/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे। तरक्की करने के लिए यह समय बहुत अच्छा है। आप में नेतृत्वक्षमता उत्तम है। उच्चाधिकारी आप से प्रसन्न रहेंगे। सरकार से सम्मान मिल सकता है। इच्छाएं पूर्ण होंगी, वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है, आपकी छवि उत्तम होगी। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है, इस से नीति और धैर्य द्वारा बचा जा सकता है। जीवनसाथी के माध्यम से लाभ हो सकता है। यात्रा संभव है।

आपके जीवनसाथी को व्यापार से लाभ हो सकता है। आपके पिता को निवेश से लाभ हो सकता है। माता, सफल और धनी बनेंगी, स्पर्धियों पर विजय होगी। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, उच्चपद, धन, इच्छाओं की पूर्ति और सुविधाओं का संकेत है।

आपकी संतान भाग्यशाली होगी; परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, यात्रा हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल होंगे। परामर्शदाता भी सफल रहेंगे। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पित्तविकारों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- गुरु - चन्द्र
(22/05/2028 - 21/09/2029)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 20/01/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 22/05/2028 को आरंभ होकर 21/09/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपकी लाभकारी दूरस्थ स्थान की यात्रा होगी। स्वास्थ्य उत्तम होगा, धनी बनेंगे। धनागम सरलता से होगा। संतान से सुख मिलेगा। बहुत से मित्र होंगे। बड़े भाई-बहनों से संबंध मधुर होंगे, वे धनी बनेंगे। आपकी कला और खेलकूद में रुचि होगी। धर्म और अध्यात्म में दिलचस्पी हो सकती है। जनता की भलाई के कार्य करेंगे।

आपके जीवनसाथी को सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है।

आपके पिता के स्पर्धियों की संख्या में कमी आएगी, वे कला में रुचि लेंगे। माता के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकते हैं, अचानक लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, माता-पिता से लाभ, आत्म-विश्वास में वृद्धि, सुख-सुविधाओं और उत्तम स्वास्थ्य का संकेत है।

आपकी संतान को सामूहिक गतिविधियों से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय सुविधा संपन्न होगा। परामर्शदाताओं के लाभ में वृद्धि होगी। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। कानों और शरीर के निचले अंगों की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए भैरवजी की उपासना दूध से करें।

अंर्तदशा :- गुरु - मंगल
(21/09/2029 - 28/08/2030)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 20/01/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 21/09/2029 को प्रारंभ होकर वद 28/08/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। आर्थिक समस्याएं आ सकती हैं, कर्ज़ बढ़ सकता है। अध्यात्म और धर्म में रुचि बढ़ेगी। मुकदमे में जीत होगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा। निवेश और साझेदारी से लाभ हो सकता है। विरोधियों पर विजय होगी। कला और साहित्य में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; स्पर्धियों पर विजयी होंगे। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं; वाहन सुख रहेगा। माता की दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, स्पर्धियों पर विजय, धन के लाभ का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन आ सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकारिता से लाभ होगा; आय अच्छी होगी। अरिष्ट से बचाव के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ॐ अं अंगारकाय नमः

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,केतु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

हर्ष योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वाक्रमाद्भावैः हर्षयोगः।
सुखभोगभाग्यदृढगात्रसंयुतो
निहताहितो भवति पापभीरुकः ।
प्रथितप्रधानजनवल्लभो धन-
द्युतिमित्रकीर्तिसुतवांश्च हर्षजः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/ श्लोक 57, 63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में छठा भाव या षष्ठेश अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो तथा षष्ठेश दुःस्थान में निवास करता हो तो हर्षयोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि,राहु,मंगल योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाले व सुखी, भोगी, शत्रुजीत, पापकर्म में लिप्त एवं भयातुर होंगे परंतु आप प्रसिद्ध, प्रधानप्रिय, धन, पुत्र, मित्र से सुखी एवं यशस्वी होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 4।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

विपरीत राज योग

रिपुपतौ व्यये स्थिते।
अन्योन्यर्क्षगता निरीक्षणयुताश्चान्यैरयुक्तेक्षिता
जातोऽसौ नृपतिः प्रशस्तविभवो राजाधिराजेश्वरः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। पृ. 135 ।।

यदि जन्मपत्रिका में छठे भाव का स्वामी द्वादश (हानि) भाव में स्थित हो, इन भावों के स्वामी एक दूसरे की राशि में हों या एक दूसरे से वीक्षित हो और अन्य भावों के स्वामियों से युत या निरीक्षित न हो तो विपरीत राजयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप विपरीत राजयोग के अनुकूल प्रभावानुसार आप ग्राम प्रधान, जिला प्रधान, वार्ड प्रधान, विधायक,

सांसद, प्रशासनिक अधिकारी अथवा राजपत्रित पदाधिकारी पद पर आसीन होकर पूर्ण रूपेण राजसुख का आनन्द प्राप्त करेंगे।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

विलग्नेविक्रमराशिनाथे बुधेन युक्ते गलरोगमत्र।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-44

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश बुध युक्त लग्न में स्थित हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु भ्रातृ योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

उच्च प्रासाद (भवन) प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गृहेशे स्वबलान्विते ।
तदीशे बलसंपूर्णे हर्म्यप्राकारमण्डितम् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-59 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भवन में शुभ ग्रह स्थित हो, चतुर्थेश अपने बल से पूर्ण हो तृतीयेश बलिष्ठ हो तो विशाल भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको महल (भवन) सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

भवन प्राप्ति योग

विचित्रसौधप्राकारमण्डितं गृहमादिशेत् ।
कर्माधिपेन सहिते नाथे केन्द्रेर्कसूनुना ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-62 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सुख भाव एवं कर्म भाव का स्वामी शनि के साथ केंद्र में स्थित हों तो रंग-बिरंगा सुसज्जित भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि,गुरु,शुक्र,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका मे यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सुंदर सुसज्जित भवन का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुन्दर भवन प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गेहेशे स्वबलान्विते ।
लग्नेशे बलसंपूर्णे हर्म्यं प्राकारसंयुतम् ।।
।। जातकपारिजात ।। अ.12/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभ ग्रह हो, चतुर्थेश बलिष्ठ हो और लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक को सुंदर भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल,शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको

सुंदर भवन प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

क्रूरांशे पुत्रभावेशे नीचमूढसमन्विते ।
पापैर्दृष्टेऽथ वा दुःस्थे पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश क्रूर नवांशक में नीच या अस्तंगत हो, पाप ग्रहों से दृष्ट अथवा दुःस्थान में हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि,गुरु — योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र सुख में अभाव हो ऐसी संभावना है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप

मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध,शनि,शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ।
कर्माधिपेन वा युक्ते बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-30 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या मित्र राशि में या अपने अंशादि में हो अथवा दशमेश से युक्त हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका अनेक से संबंध स्थापित होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

रन्ध्रेशेंगे अस्ते द्विभार्यः।।

।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 302 ।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश लग्न में अथवा सप्तमभाव में स्थित हो तो द्वि भार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

धर्म कार्य में धन व्यय योग

व्ययाधिपसमायुक्तनवभागपतौ शुभे ।
शुभांशे शुभमध्यस्थे धर्ममूलाद्धनव्ययः ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.8/व्ययभाव-4 ।।

यदि जन्मपत्रिका में व्ययेश जिस नवांश में हो वह शुभग्रह हो एवं शुभग्रह के अंशक में शुभग्रहों के मध्य हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अपने धन का व्यय धर्मकार्य में करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

देश विदेश यात्रा योग

व्ययेशे पापसंयुक्ते व्यये पापसमन्विते ।
पापग्रहेण संदृष्टे देशाद्देशान्तरं गतः ।।

।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।। अ.12/श्लो.-

यदि जन्मकुंडली में व्ययेश पाप ग्रह से युक्त हो और व्यय भाव में पाप ग्रह हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि व्यय भाव पर हो तो जातक देश विदेश में जाने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,राहु,केतु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप देश विदेश में भ्रमण करने वाले होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

धर्ममूलक धन व्यय योग

लग्नेशे व्ययराशिस्थे व्ययेशे लग्नसंयुते ।
भृगुपुत्रेण संयुक्ते धर्ममूलाद्धनव्ययम् ।।
।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।। अ.12/श्लो.-

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में लग्नेश हो और व्ययेश लग्नस्थ हो, शुक्र से युत हो तो धर्ममूलक धन व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,मंगल योग की संभावना : 1728 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अपना धन धार्मिक कार्य में व्यय करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,केतु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।